भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 **दिसम्बर** 2009 **अंक** 12

जन्म
28 सितम्बर 1921 ई.

तिरोधान
21 नवम्बर 2009 ई.

वाग्देवी के अनन्य उपासक प्रो० कल्याणमल लोढ़ा का तिरोधान

वैदुष्य एवं आर्णव, मार्दव के जीवन्त प्रतीक, वाक्तत्व के मनीषी व्याख्याता, विद्वता एवं वाग्मिता की साकार प्रतिमा, वाग्विकल्पों के साधक-सन्धाता, हिन्दी-भाषा और साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान, साहित्य-समालोचक **प्रो० कल्याण मल लोढ़ा** जयपुर में 21 नवम्बर की रात हमें चुपके से अलविदा कह गये। 89 वर्षीय प्रो० लोढ़ा की जीवन-यात्रा सारस्वत-साधना की दास्तान रही है। हिन्दी का अभिजात्य स्वरूप जिन कुछ लोगों में दिखाई देता है, उनमें प्रो० कल्याणमल लोढ़ा का नाम बेधड़क लिया जा सकता है। अपने साहित्यिक-अवदानों के लिये मूर्तिदेवी पुरस्कार, सुब्रह्मण्यम् सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित प्रो० लोढ़ा कोलकाता विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापक फिर विभागाध्यक्ष और तत्पश्चात् जोधपुर विश्वविद्यालय में कुलपति रहे। वे के०के० बिड़ला फाउण्डेशन, भारतीय विद्या भवन, भारतीय भाषा परिषद सहित कई सामाजिक, स्वयंसेवी, साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध थे। प्रोफेसर लोढ़ा ने अनेकानेक शोधपरक निबन्ध लिखे। उनकी प्रमुख पुस्तकों में—वाग्मिता, वाग्पथ, इतस्ततः, प्रसाद-सृष्टि और दृष्टि, वाग्दोह, वाग्विभव, वाग्द्वार, वाक्सिद्धि, वाक्तत्त्व, बृहत श्लोक संग्रह, धर्मदर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद, वाग्धारा, सोमतत्व, दिव्य प्रतीक आदि शामिल हैं। उन्होंने प्रज्ञाचक्षु सूरदास, बालमुकुंद गुप्त-पुनर्मूल्यांकन, भक्ति तत्त्व आदि ग्रन्थों का सम्पादन भी किया। मूलतया साहित्यालोचन के माध्यम से उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की। 'भारतीय वाङ्मय' के संस्थापक स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी के अनन्य हितैषी मित्र एवं प्रेरणास्रोत आचार्य लोढ़ा जी को भारतीय वाङ्मय परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि!

वर्ष-संधि की द्वाभा

रोमन-कैलेण्डर का आखिरी महीना है दिसम्बर। महीने के अन्तिम सप्ताह में पड़ने वाले ईस्टर-पर्व पर चर्च की घंटियों के साथ वर्ष परिवर्तन होगा और समय के सिलसिले में जुड़ जायेगा एक नया कल्प। वर्ष-संधि के इस अवसर पर शिक्षा-संस्कृति, भाषा और साहित्य सम्बन्धी अपने आकलन का लेखा-जोखा करते हुए हम परीक्षण के दौर में आ पहुँचे हैं। इसी साल सम्पन्न हुए 15वीं लोकसभा के चुनाव और सरकार बनने के बाद का परिदृश्य भारत में उन्मुक्त पूँजीवादी बाज़ार-संरचना की तस्वीर पेश कर रहा है। सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को दृष्टि में रखकर मानव-संसाधन मंत्रालय ने जहाँ व्यापक शैक्षणिक सुधार की प्रक्रिया तेज की है वहीं विदेशी विश्वविद्यालयों के आगमन का रास्ता भी खोल दिया है। प्रसारण-मीडिया और पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में भी विदेशी मीडिया-समूहों और प्रकाशकों के लिए भी भारतीय बाज़ार खुल चुका है। भले ही हम अपने संस्कारों के अनुसार भाषा-साहित्य, शिक्षा और संस्कृति को बाज़ार से ऊपर मानकर पूजते रहें, कार्ल-मार्क्स कहते रहें कि विद्या जैसी पवित्र वस्तु भी बाज़ार में जाकर अपवित्र हो जाती है; तो यह हो चुका है। पश्चिम की तरह भारत में भी 'विद्या' बिकाऊ बन चुकी है।

वस्तुतः जिस खतरे की ओर हम संकेत करना चाहते हैं वह यह कि मानवीय चेतना के संस्कार के मूल-घटक—शिक्षा-संस्कृति-भाषा-साहित्य आदि बाज़ार की चपेट में हैं जिसके खिलाफ सचेतन बुद्धिजीवियों, रचनाकारों का संघर्ष भी जारी है, मगर कब तक? इस आसन्न खतरे का सामना करने की दिशा में शैक्षणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक संगठनों को सुविचारित पहल करनी होगी। सरकारी विकास की सिद्धान्तहीनता और बाज़ार की लाभवादी भौतिकता के समानांतर जन-प्रतिबद्ध, संस्कार-सर्जक-तंत्र विकसित करना होगा अन्यथा हमारी अगली पीढ़ी स्वाभिमानरहित शिक्षित-गुलामों की आत्महीन फौज बन कर रह जायेगी। इस खतरे को चुनौती मानकर हमें अपनी चेतना को जागृत रखना है, राष्ट्रीय स्वाभिमान को उद्दीप्त रखना है तभी राजनीति और बाज़ार की वैश्वक-व्यूह रचना के बीच हमारी पहचान कायम रह सकेगी।

इन्हीं चुनौतियों के रू-ब-रू अगले महीने की 30 जनवरी से 7 फरवरी, 2010 के बीच दिल्ली के प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होने जा रहा है। पुस्तक मेले के प्रांगण में हम अपने समग्र ज्ञान-विज्ञान और उपलब्धियों के प्रकाशित-प्रारूप द्वारा अपनी सांस्कृतिक-अस्मिता के अनवरत विकास-क्रम को रेखांकित करते हैं और हमारा प्रकाशन उद्योग विश्व-बाज़ार की प्रतियोगिता में शामिल होता है। दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ 37 से अधिक भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित होती हैं और अंग्रेजी पुस्तकों के प्रकाशन के मामले में ब्रिटेन और अमेरिका के बाद भारत का तीसरा स्थान है। भारत के विशाल पुस्तक-बाज़ार की सम्भावनाओं को देखते हुए दुनिया के कई बड़े प्रकाशक इधर आकर्षित हुए हैं। भारतीय पुस्तक-बाज़ार को विश्व बाज़ार से जोड़ने की दृष्टि से नेशनल-बुक-ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा 1972 में प्रथम विश्व पुस्तक मेला

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

आयोजित किया गया। मेले की सफलता और जनता की भागीदारी को देखते हुए तबसे अब तक हर दूसरे साल यह मेला उत्तरोत्तर संवर्धनशील, नवीन सम्भावनाओं के साथ आयोजित होता रहा है। नयी दिल्ली का यह पुस्तक-मेला लेखकों, प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं और पाठकों के अंतरसम्बन्धों को कायम रखने में मददगार होता है। यह एक ऐसा अवसर है जहाँ विदेशी और भारतीय प्रकाशकों के स्वत्वाधिकार-विनिमय, अनुवाद, सह-प्रकाशन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, प्रस्तुति और व्यापार के प्रोन्नयन का मंच भी प्राप्त होता है।

सर्जनात्मक-आत्माभिव्यक्ति के विभिन्न आयामों के दिग्दर्शन और ज्ञान के नूतन क्षितिजों का उद्घाटन है पुस्तकों का यह संसार, यहाँ मनुष्य की चेतना तराशी जाती है उसकी आत्मा का उन्नयन होता है। हमारी संस्कृति ने वाणी, विद्या और ज्ञान-विज्ञान को अपनी धार्मिक-आस्था में शामिल किया था, आज भी कुछ अंशों में ही सही वह मनोवृत्ति बनी हुई है। अपनी इसी वृत्ति को नया अर्थ देते हुए हमें इस विश्व पुस्तक मेला के आयोजन को भी, धार्मिक-आस्था के महाकुंभ / ईद / ईस्टर / होली / दीवाली / बैसाखी की तरह लेना चाहिए। यह मेला देश, धर्म, जाति की सीमाओं से मुक्त ज्ञान के संसार का सार्वभौमिक-उत्सव है। आइए, पुस्तकीय-मंजूषा में संकलित बहुमूल्य रत्न एकत्र करें, देश-विदेश की साहित्य-संवेदना को अनुभूत करें; वैश्वक-विचारों को जानें, विमर्श में हिस्सा लें; विज्ञान-धर्म में दीक्षा लेकर विद्या-तीर्थ का अवगाहन करें, विश्व पुस्तक मेले की यात्रा करें और वर्ष संधि की गोधूलि-द्वाभा में जिज्ञासा की परतें खोलते हुए अपनी 'पहचान' को पहचानें।

शशिमुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाये,
जीवन की गोधूलि में
कौतूहल से तुम आये।

सर्वेक्षण

मानुस-गंध : याद आता है नानी-दादी की कहानी वाला वह राक्षस जो अपनी आत्मा की अँधेरी सुरंग में रहता था और 'मानुस-गंध' पाते ही उसकी भूख जाग जाती थी। कुछ इसी तर्ज पर मुम्बई में एक पार्टी बनी, राक्षस ने मनुष्यों की बलि लेकर अपनी राजनीतिक-भूख मिटायी और प्रान्त में अपना आतंक कायम कर लिया। कानून की बारीकियों के दाँव-पेंच में उलझी केन्द्रीय सरकार भी राक्षस को कैद न कर सकी उल्टे उसे सुरक्षा देने को मजबूर हुई। इस राक्षस के एक भतीजा भी था जिसने चचा के नक्शे-कदम पर चलते हुए एक दिन चचा से बग़ावत की और बिलकुल चचा के तौर-तरीकों से 'मानुस-गंध' पाते ही अपनी क्षुधा शान्त करने लगा। चचा-भतीजे की करतूतों के समक्ष लाचार हो गयीं केन्द्र और प्रान्त की सरकारें। इसीलिये तो कुछ दिन पहले एक निर्वाचित विधायक के शपथ-ग्रहण के समय इन लोगों ने सदन में मारपीट, गाली-गलौज करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान किया और सरकार खामोश देखती रही। आखिर क्यों? क्या चचा-भतीजे से डरती है सर्व-शक्तिमान सरकार?

वंदेमातरम् : हमारी सभ्यता की शुरुआत में ही अथर्ववेद के ऋषि ने 'माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:' के मंत्र-दर्शन द्वारा धरती को मातृत्व प्रदान किया। हज़ारों साल की सांस्कृतिक-यात्रा ने इस मंत्र की मूलभावना को जन-जन के हृदय में स्थापित कर दिया। भारतीय-मानसिकता धरती के साथ नदियों को भी माँ का दर्जा देने लगी। ब्रिटिश-साम्राज्य की गुलामी के दौर में आधुनिक ऋषि बंकिमचन्द्र ने इसी मातृत्व की भाव-प्रतिमा को एक नया अर्थ दिया और कोटि-कोटि कंठों के कलकल नाद से गूँज उठा आकाश—'वंदेमातरम्'। आज़ादी की लड़ाई में इसी मंत्र की अंत:प्रेरणा से ऊर्जित क्रान्तिवीरों ने आत्म-बलिदान दिये, यही मंत्र बोलते हुए हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर झूल गये हज़ारों नौजवान। राष्ट्र-साधना के इस महामंत्र के ऐतिहासिक-महत्त्व को भला कौन नकार सकता है? मगर हमारे मुल्क में वोट की राजनीति सब-कुछ कर सकती है। इसीलिये तो एक धार्मिक-सम्प्रदाय अपने महा-सम्मेलन के बीच अपने अनुयायियों के लिए राष्ट्रगीत-गान का निषेध करता है। फिर भी सन्तोष की बात है कि इसी धर्म-वर्ग के एक समूह ने केन्द्र सरकार से आधिकारिक तौर पर राष्ट्रगीत के तर्जुमे की पेशकश भी की है। देर-आयद दुरुस्त-आयद के अनुसार सामाजिक-सद्भाव और सामरस्य के लिए सरकारी-तंत्र राष्ट्रगीत के अनुवाद को जितनी जल्दी प्रस्तुत कर सके, उतना अच्छा होगा।

इस दिशा में एक कोशिश हमारी भी—

वंदेमातरम्!
माँ तुझे सलाम!
सबाब ही सबाब है
आबो-हवा-मिट्टी तेरी
तेरे आँचल में झूमती फसलें
आँगन में नाचती बहार!
माँ तुझे सलाम!

—परागकुमार मोदी

वस्तुत: पुस्तकें नहीं हैं, अपितु पुस्तकों की वेशभूषा में वस्तुएँ हैं। शरीर की रक्षा के लिए हम भोजन करते हैं, उसे कपड़ों से सजाते हैं, उसे स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम भी करते हैं। लेकिन क्या हमने सोचा है कि हमारा दूसरा जो सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व है, उसकी रक्षा और उसके विकास के लिए हम क्या कुछ करते हैं? शायद नहीं। चूँकि बुद्धि हमें दिखाई नहीं देती, इसलिए हम उसके लिए कुछ करते भी नहीं। इस बुद्धि का भोजन क्या हो सकता है? पुस्तकों के सिवाय कुछ भी नहीं। इस बुद्धि की कसरत क्या हो सकती है? चिन्तन और मनन के सिवाय कुछ भी नहीं। इसके लिए जरूरी कच्चामाल कहाँ से आयेगा, पुस्तकों से।

अनाथ, विवश एवं दिशाहीन भारतीयता

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र

भारत में तुर्क आक्रमणकारियों द्वारा स्थायी रूप से पाँव जमाने से पूर्व (12वीं शती ई०) राष्ट्रिय-परिदृश्य एकदम साफ था। भाषा, परिधान, भोजन एवं धार्मिक मतभेदों के बावजूद—तिब्बत (संस्कृत त्रिविष्टप) से लेकर कन्याकुमारी तक का भूक्षेत्र 'भारतवर्ष' के नाम से जाना जाता था। यहाँ के निवासी भी 'भारतीय' के रूप में पहचाने जाते थे—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चापि दक्षिणम्।
वर्षं तद् *भारतं* नाम *भारती* यत्र सन्ततिः॥

पश्चिमोत्तर दिशा से आने वाले आक्रान्ताओं की सबसे बड़ी रोक सिन्धु नदी थी, जिसे यूनानियों ने 'इण्डस' तथा फारसी, पह्लवी एवं तुर्कभाषाभाषियों ने 'हिन्द' कहा। 'इण्डस' तथा 'हिन्द' को ही आधार मान कर भारतवर्ष को 'इण्डिया' तथा 'हिन्दोस्ताँ' कहने की परम्परा चल पड़ी। यहाँ के निवासी भी 'हिन्दू' बन गये।

मुहम्मद गोरी (1192 ई०) से पूर्व भी भारत पर खसों, हूणों, शकों तथा कुषाणों के आक्रमण हुए। इनमें से अनेक युद्धशूर आक्रान्ता तो भारत में ही रह गये। उन्होंने यशस्वी राजवंशों की स्थापना की तथा निष्ठापूर्वक प्रजापालन किया। शकक्षत्रप रुद्रदामन् पुलुमावी, शातकर्णी आदि मूलतः शक थे तो कनिष्क, हुविष्क आदि कुषाण। तोरमाण मूलतः हूण था। खस संस्कृति का प्रत्यक्ष भाषाई एवं पारम्परिक प्रभाव आज भी हिमाचलप्रदेश के उत्तरी-पूर्वी जनपदों में विद्यमान है।

शक, कुषाण, हूण तथा खस तो पूर्णतः **भारतीय** बन गये शैव, वैष्णव अथवा सौगत धर्म को अपना कर। अतः भारतवर्ष की हजारों वर्ष पुरानी 'पहचान' में कोई अन्तर नहीं आया क्योंकि 'भारतीयता' पूर्ववत् बनी रही।

अन्तर आने का सूत्रपात हुआ उन सल्तनत-शासकों द्वारा जो भारत को 'इस्लाम' बनाना चाहते थे। ये प्रजापालक, प्रजारक्षक एवं आदर्श शास्ता नहीं अपितु समूची भारतीयता के संहारक थे। इस संहार के लिये ही उन्होंने कत्ले-आम, जजिया, बलात् धर्मान्तरण, मूर्ति-भञ्जन, मन्दिर-विध्वंस आदि अमानवीय नृशंस कृत्यों को अपनाया। शाहआलम के बाद अंग्रेजों का शासन आया। उनमें यद्यपि इल्तुतमिश, अलाउद्दीन तथा औरंगजेब वाला रोग तो नहीं था, परन्तु समूचे भारत पर अनन्त काल तक शासन करते रहने की हवस अवश्य थी। ये जातियाँ भी भारत में स्थिर हो गईं। अब, आज की 'भारतीयता' का अर्थ है हिन्दू, मुस्लिम तथा क्रिश्चियन। इनमें, पुराने समय का 'भारतीय' भी आज बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि संज्ञाओं में विभक्त होकर गर्व अनुभव करने लगा है। फिर भी वह अपने चिर-परिचित मार्ग पर ही चल रहा है। मूलतः वह हिन्दू ही है।

आवश्यकता है केवल उनकी मानसिकता परिवर्तित होने की जो आज भी अपनी पुरानी मानसिकता को मन-प्राण में भरे स्वयं को 'भारतीय' मानते हैं। सांख्यदर्शन का त्रिगुणवाद कौन नहीं जानता? सारी सृष्टि ही त्रिगुणात्मिका है। सत्त्व, रजस् तथा तमस् ये तीनों गुण स्वरूपतः परस्पर भिन्न हैं। परन्तु शरीर में इन तीनों गुणों का साम्य (संवाद) विद्यमान है। आयुर्वेद में वात, पित्त एवं कफ भी परस्पर भिन्न हैं। परन्तु उन तीनों का सामञ्जस्य ही 'स्वास्थ्य' कहा जाता है। किसी एक की विषमता ही 'रोग' है।

मेरी दृष्टि में हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन के रूप में आज भी भारतीयता भी त्रिगुणात्मिका है। अतः इसे शान्त एवं सुस्थिर रहने के लिये अनिवार्य है इसके संघटकों की शान्ति एवं सुस्थिरता। परमेश्वर, अल्लाह एवं गॉड के नाम पर कृपया स्वयं को आज का 'भारतीय' मानिये तथा अनुभव कीजिये। अब आपका धर्म, आपकी संस्कृति, आपका शरीर भारत के अन्न-पानी से पोषित है न कि किसी अन्य राष्ट्र के। प्रत्येक भारतवासी को आज नैष्ठिक भारतीय होना चाहिये न कि प्रच्छन्न-भारतीय। तभी राष्ट्र सनाथ होगा, स्वाधीन होगा तथा अपना लक्ष्य प्राप्त करेगा। कहाँ तो इस राष्ट्रीय स्तर पर 'भारतीयता' को प्रतिष्ठित करने की समस्या और कहाँ 'मराठी मानुस' और 'मुम्बई' का राग? क्या वीर सावरकर एवं तिलक ने मात्र महाराष्ट्र एवं मुम्बई की स्वाधीनता के लिये संघर्ष किया था या फिर समूचे राष्ट्र के लिये? हमारी 'खण्ड-सोच' बदलनी चाहिये।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

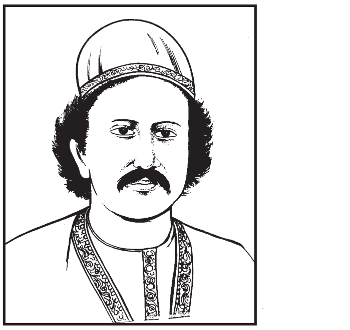

भारतेन्दु का पुस्तक प्रेम

'कविवचन सुधा' 26 दिसम्बर, 1871 अंक में प्रकाशित विज्ञापन

''सन् 1871 की पहली जनवरी से 31 दिसम्बर तक हिन्दी वा संस्कृत में जितनी पुस्तकें छपैं मैं सब में की एक-एक प्रति मोल लेता हूँ। सब छापने वाले को उचित है कि जो पुस्तक नई छापैं एक प्रति भेज दें और मूल्य मँगवा लें।''

पुस्तक कैसी अद्‌भुत विचित्रशाला (Museum) (अजायबघर) है संसार में अनेक विचित्रशालाएँ नष्ट हो गईं परन्तु यह शाला पृथ्वी के आदि दिन से आज दिन तक ज्यों की त्यों बनी है। मनुष्य जाति का यही सर्वोत्तम नाम है।

क्या पुस्तकों में अब महाकार्य्य और अद्‌भुत व्यापार करने की शक्ति नहीं रही? हम तो जानते हैं कि उनमें जैसी सर्वदा थी वैसी ही अब भी बनी है। आजकल हमारे शिक्षित समाज में चाकचक्य चिकनाहट की जो चाल है : पश्चिमीय सभ्यता की गन्धि जो उसमें फैली है, प्रेमाराधन का सोता जो उसमें धड़धड़ाहट से बह रहा है, यह किसका फल है? यह केवल उन विषयों की पुस्तकों के अधिक प्रचार का फल है। पुस्तकों के पाठ से विचार उत्पन्न होते हैं, विचार होने से अभिलषित पदार्थ के प्राप्त करने की इच्छा होती है, इच्छा होने से मनुष्य कार्य करता है और कार्य्य करने से फल प्राप्त होता है। वट सरीखे महावृक्ष का मूल कारण जैसे उसका छोटा-सा बीज मात्र है संसार के वर्तमान महाकार्य्यों का सूत्रपात वैसे ही मनुष्य के लिखे हुए चिन्ह मात्र अक्षरों से हुआ है। विचार कर देखो पौराणिक लोग ऐसा कौन-सा गूढ़ कार्य अपनी कथा में वर्णित करते हैं जो वर्तमान में पृथ्वी पर पुस्तकों के कार्य्य से बढ़ कर हो।

हमें संकल्प लेना ही चाहिए कि हम हर माह कोई न कोई पुस्तक अवश्य ही पढ़ेंगे। कुछ समय के बाद आप देखेंगे कि किस तरह से पुस्तकों के इस अध्ययन ने आपके सोचने-समझने के तौर तरीकों को बदलकर आपके जीवन के रास्तों को कितना आसान और सुखद भी बना दिया है।

वाणी के शृंगार : वाक् पुरुष प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

—पुरुषोत्तमदास मोदी

कलकत्ता जाने का काम बराबर पड़ता था, कभी संस्थाओं के काम से और कभी पारिवारिक कार्य से। वहीं यह जानकर आश्चर्य हुआ कि राजस्थानी समाज का एक व्यक्ति कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग का अध्यक्ष है। पुस्तक प्रकाशन मेरा कर्म था, अत: उनसे मिलने की इच्छा हुई। इसके पूर्व श्री विष्णुकान्त शास्त्री से उनके निवास पर मिल चुका था, उन्होंने श्री लोढ़ाजी की चर्चा की। अत: एक राजस्थानी बन्धु के साथ उनके देशप्रिय पार्क स्थित निवास पहुँचा। उन्होंने अत्यन्त स्नेह प्रदान किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से वे अवकाश ले चुके थे। कुछ समय बाद लोढ़ाजी जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति हो गये।

28 सितम्बर 1983 को लोढ़ाजी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण किया था। उनके शिष्य लोढ़ाजी के सम्मानस्वरूप कलकत्ता विश्वविद्यालय में उनके गौरवशाली युग का स्मृति फलक प्रस्तुत करना चाहते थे। उनके शिष्य डॉ० अवधेशप्रसाद सिंह से सम्पर्क हुआ और 1990 ई० में **वाग्धारा** का प्रकाशन हुआ। इसके समर्पण पृष्ठ पर अंकित है—

श्री गुरवे नम:

जिनके आशीर्वचन से श्रीपीठ में प्रवेश किया, जिनके चरणों में बैठकर दृष्टि-पथ का संधान किया, जिनकी वाणी ने साहित्य की पावन यात्रा कराकर सारस्वत साधना की ओर अभिमुख किया एवं जिनके प्रकाण्ड वैदुष्य ने हमें गति और मति दी, उन्हीं आचार्य कल्याणमलजी लोढ़ा को यह 'वाग्धारा' सश्रद्ध एवं सविनय समर्पित है।

इस ग्रन्थ में लोढ़ाजी के शोधार्थी शिष्यों के काव्य, नाटक, कथा साहित्य और इतिहास से सम्बन्धित विषयों पर डॉ० शम्भुनाथ, डॉ० जगदानन्द पाण्डे, डॉ० पुष्पपाल सिंह, डॉ० अवधेशप्रसाद सिंह, निर्मला पाण्डेय आदि के 13 आलेख प्रकाशित हुए। ये आलेख लोढ़ाजी की दृष्टि 'ज्ञानवृद्धि ही साहित्य अनुसंधान का व्यावर्तक धर्म है' को अभिव्यक्त करते हैं।

जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति पद से निवृत्त होने के बाद वे पूर्णत: चिन्तन मनन और लेखन में संलग्न हो गये। लोढ़ाजी वाक् पुरुष हैं। स्वामी प्रत्यागात्मानन्द सरस्वती उनकी प्रेरणा हैं। लोढ़ाजी ने अनेकानेक ग्रन्थ लिखे जिनमें वाक् तत्त्व प्रमुख है। कलकत्ता की प्रतिध्वनि संस्था ने प्रारम्भ में वाग्मिता, वाक् तत्त्व एवं इतस्तत: ग्रन्थों का प्रकाशन किया। इस प्रकार 14 या 16 मौलिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने 16 ग्रन्थों का सम्पादन किया। सोम तत्त्व, धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद, बृहत श्लोक संग्रह, वाकसिद्धि, वाग्विभव, वाग्द्वार, वाग्दोह आदि। (विश्वविद्यालय प्रकाशन)। प्रणव तत्त्व, भा०सा० में राधा, गीता तत्त्व चिंतन, प्रज्ञाचक्षु सूरदास आदि (नेशनल पब्लिशिंग हाउस)।

डॉ० लोढ़ा केवल हिन्दी के ही विद्वान नहीं थे। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। हिन्दी-साहित्य के पठन-पाठन तथा अध्यापन में उनकी एक अपनी तुलनात्मक दृष्टि थी। मूलतया साहित्यालोचन के माध्यम से उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की। अंग्रेजी, यूरोपीय, बंगाली, मराठी, राजस्थानी आदि साहित्य के वे अधिकारी जानकार थे।

पूर्व और पश्चिम का अद्भुत सामंजस्य उनके आलेखों में मिलता है। भवभूति और कालिदास सहित दुनिया भर के विद्वानों को वह भी सन्दर्भित करते थे, पर उसे मौजूदा सन्दर्भों से जोड़कर देखने की लियाकात थी उनमें, जो उनके विचार को एक मौलिकता देती थी।

वे केवल साहित्य के मर्मज्ञ ही नहीं थे उनकी जैन मत और दर्शन में अच्छी पैठ थी। वास्तव में वे एक दार्शनिक और गम्भीर विचारक थे। उनका चिन्तन क्षितिज विशाल था। केवल भारतीय-दर्शन के विविध पक्षों से ही नहीं पाश्चात्य दर्शन के सभी अंगों-प्रत्यंगों से वे पूर्ण रूप से परिचित थे। उनकी पुरस्कृत रचना 'वाग्विभव' में सहज ही उनके गहरे जीवन में व्यक्त पाण्डित्य की एक झलक देखने को मिलती है। उन्होंने अपने जीवन में व्यक्ति और समाज की समस्याओं को समरसता और समग्रता से देखा है और अपनी रचनाओं में विश्लेषित किया है।

—श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी
पूर्व राज्यपाल, कर्नाटक

वाक्पथ, वाग्मिता प्रकाशित हो चुके थे। 1999 में लोढ़ाजी का ग्रन्थ 'वाग्विभव' प्रकाशित करने का सौभाग्य मिला। यह ग्रन्थ लोढ़ाजी की पत्नी श्रीमती लिली लोढ़ा के महाप्रयाण फाल्गुन कृष्णाष्टमी संवत् 2055 जानकी जयंती दिवस पर अपनी भामती स्वर्गस्थ, सहधर्मिणी श्रीमती लिली लोढ़ा को (वाग्विभव प्रति प्रणाम के साथ) समर्पित है जो उनकी स्मृति में प्रकाशित है। इस समर्पण ग्रन्थ में धर्म तथा दर्शन का अद्भुत समन्वय है। ग्रन्थ के विषय हैं—कर्मतत्त्व, पुनर्जन्म तत्त्व, मोक्ष तत्त्व, प्राण तत्त्व, भक्ति तत्त्व, श्रद्धा तत्त्व, काम तत्त्व तथा नीति तत्त्व।

लोढ़ाजी के इस ग्रन्थ की सर्वत्र सराहना हुई। यह ग्रन्थ मूर्तिदेवी पुरस्कार से पुरस्कृत हुआ। के०के० बिड़ला फाउण्डेशन ने भी मान्यता प्रदान की।

2000 ई० में सांस्कृतिक बोध तथा भारतीय परम्परा से संयुक्त नए गवाक्ष खोलने वाले कवियों कबीर, तुलसी, सूर, मैथिलीशरण, प्रसाद, निराला, महादेवी तथा पं० माखनलाल चतुर्वेदी की रचनात्मक चेतना के वैशिष्ट्य की समीक्षा 'वाग्द्वार' प्रकाशित किया। श्री विद्या के उपासक स्वामी प्रत्यगात्मानन्दजी से साधना सिद्धि युक्त लोढ़ाजी की तीसरी पुस्तक 'वाग्दोह' 2001 ई० में प्रकाशित की।

इसी वर्ष लोढ़ाजी की चौथी पुस्तक 'वाक्सिद्धि' प्रकाशित हुई। इसकी भूमिका में लोढ़ाजी ने लिखा है—''मैं वाक् की साधना को सर्वोपरि साधना समझता हूँ। वाग्देवी का बीजमंत्र 'ऐं' है और यही मेरा गुरुमंत्र भी है। वाक् को ब्रह्म जानकर जो इसकी उपासना करता है, उसकी गति और मति सार्थक होती है।''

लोढ़ाजी साहित्य मनीषी हैं। उनके साहित्य में भारतीय प्रज्ञा अपनी सम्पूर्णता से अभिव्यक्त है। चिन्तन, मनन, दर्शन, अध्यात्म उनकी सहज प्रवृत्ति है। वे साहित्य मनीषी हैं, अध्यात्म पुरुष हैं, वे पूर्ण मनुष्य हैं—लोक जीवन की सम्वेदना से संपृक्त।

मैंने 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' पुस्तक सम्पादित की। उसकी प्रति लोढ़ाजी को भेजी उन्होंने तत्काल प्रसादजी पर 'प्रसादजी के समकालीन संस्मरण' की पाण्डुलिपि भेज दी। इसमें मुझे प्रसादजी के जीवन पर अनजानी सामग्री मिल गई। लोढ़ाजी स्वयं प्रसाद साहित्य के विशिष्ट विद्वान हैं। 'प्रसाद : सृष्टि व दृष्टि' प्रसादजी के कृतित्व का गहन अध्ययन प्रस्तुत करती है।

लोढ़ाजी का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जगत में ऐतिहासिक योगदान है। वृहत्तर भारतीय समाज में उनकी आस्था है। उनके निर्देशन में कई महत्त्वपूर्ण शोध प्रबन्ध प्रकाशित हुए जिनमें अनेक ने अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त की। डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र की 'हिन्दी पत्रकारिता' डॉ० शिवनारायण खन्ना का 'हिन्दी उपनाम' अवधेशजी का 'हिन्दी इतिहास दर्शन' आदि मुख्य हैं। उनके अनेक शिष्यों ने अखिल भारतीय प्रतिष्ठा प्राप्त की। विष्णुकान्त शास्त्री उनके अत्यन्त निकट सहयोगी थे। इसी प्रकार डॉ० शंभुनाथ, डॉ० पुष्पपाल सिंह, डॉ० रामनाथ तिवारी, डॉ० रमापुरी आदि विशिष्ट हैं। उन्हें वाणी का जादूगर कहा जाता है।

उनकी रचना-दृष्टि प्रतिपल चिन्तन-सर्जन करती रहती है। चरैवति चरैवति उनका लक्ष्य है। लोढ़ाजी वाणी शृंगार के वाक् पुरुष हैं, अभिनन्दन, वंदन, नमन्।

('आचार्य कल्याणमल लोढ़ा : एक गौरव यात्रा' से साभार)

बहुश्रुत मनीषी, साहित्य-वैदुष्य के शिखर पुरुष प्रो० कल्याणमल लोढ़ा और उनकी प्रमुख कृतियाँ

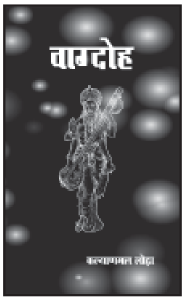

वाग्दोह

सरस्वती के अनन्य साधक प्रो० लोढ़ा की अतिविशिष्ट एवं पुरस्कृत रचना है 'वाग्दोह'—ऐसा दुग्धपात्र जो इनके अनुभवामृत से लबालब भरा है। 'वाग्दोह' अष्टधा है। स्पष्ट है, वाक् और प्रकृति अभिन्न हैं, अत: इनका दुग्धपात्र भिन्न कैसे हो सकता है? इसके अष्टधा रूप हैं—संस्कृत और संस्कृति, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे, काल, प्राचीन भारत का विद्यादर्श, शिक्षा की मूल अवधारणाएँ, अर्थतत्त्व, विश्वरूप दर्शन, सोम तत्त्व। यद्यपि भारतीय परम्परा में लेखक की अनन्य निष्ठा है तथापि अन्य परम्पराओं से दोहन में भी न केवल इनकी रुचि बल्कि पात्रता भी है। अभिनवगुप्त की भाषा का प्रयोग करें तो लोढ़ाजी का मनोमुकुर साहित्य के गहन अनुशीलन के अभ्यास से निर्मल हो गया है और इसीलिए उसमें वर्णनीय विषय में तन्मय होने की क्षमता आ गयी है। आचार्य लोढ़ा की दृष्टि 'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा' से सम्पन्न है। यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि भारतीय संस्कृति का संस्कृत भाषा और साहित्य से अन्योन्याश्रय संबंध है। अत: स्वभावत: 'वाग्दोह' का प्रथम निबन्ध है 'संस्कृत और संस्कृति' तथा दूसरा निबन्ध 'धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे', वस्तुत: इसी का विस्तार है, पर अन्य निबन्धों में भी भारतीय प्रज्ञा का अतुल तेज सर्वत्र विद्यमान है।

इन निबन्धों को पढ़ते समय बार-बार मन में यह बात उठती है कि इन तथ्यों से भारतीय विद्यार्थियों को क्यों वंचित रखा जा रहा है? जब अंग्रेजी राज समाप्त हो गया तब भी भारत अंग्रेजियत से क्यों चिपका हुआ है? स्वतंत्रता-प्राप्ति के दिन से ही विलायती शिक्षा-पद्धति की संस्थाओं को तत्काल मान्यता मिल गयी परन्तु उन्हीं के साथ-साथ स्वतंत्रता-आंदोलन से जुड़ी हुई संस्थाओं को भी क्यों नहीं मान्यता मिली? अंग्रेज तो गये परन्तु स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी और अंग्रेजियत को बराबर सरकारी संरक्षण क्यों प्राप्त होता रहा? इस यक्ष-प्रश्न को सुलझाये बिना भारतीय संस्कृति का विश्व-व्यापी तेज कैसे प्रकट हो सकता है? भारतीय जन-जीवन की तेजस्विता कैसे प्रकट हो सकती है? लेखक की मान्यता है कि 'भारतीय संस्कृति की महनीय परम्परा में वर्तमान मानव-समाज के कल्याण-सूत्र विद्यमान हैं।'—(पृ० 15)। स्वतंत्र भारत में एक के बाद एक अनगिनत शिक्षा आयोग बने फिर भी भारतीय शव को शक्ति-साधना से संयुक्त कर शिव-रूप देने का प्रयास क्यों नहीं किया गया? महात्मा गाँधी के पश्चात् भारतीयों में आत्म-विश्वास भरने के प्रयास में क्यों शिथिलता आ गयी? भारत को पश्चिम की कार्बन कापी बनाने का प्रयास क्यों किया जाता रहा है? अपसंस्कृति का शोर मचाने के बावजूद सारा तंत्र उसी को गले लगाने के लिए क्यों आकुल-व्याकुल है? यह ठीक है कि भारतीय मानस कभी संकीर्ण नहीं रहा (पृ० 44), वित्त-प्राप्ति के लिए पाणिवाद का महत्त्व रहा (पृ० 110), ऋग्वेद (10.53.6) ने 'मनुर्भव' का उद्घोष किया, फिर भी भारत हजारों वर्षों तक क्यों पराधीन रहा? 'तेजस्विनौ अधीतमस्तु' की उपासना करना, तदनुरूप आचरण करना, भारत क्यों भूल गया? क्या इन प्रश्नों का उत्तर सुलभ न होने के कारण ही वर्तमान अपसंस्कृति भारत पर हावी नहीं होती जा रही है? (पृ० 119)। प्राचीन भारत का जो विद्यादर्श था, शिक्षा की जो मूल अवधारणाएँ थीं, विश्वविद्यालय के रूप में उनका श्रीगणेश तक्षशिला से हुआ था जहाँ शास्त्र और शस्त्र दोनों की शिक्षा दी जाती थी। उसी का यह सुपरिणाम था कि विश्व-विजय का सपना देखनेवाला सिकन्दर भारत पर विजय नहीं प्राप्त कर सका। परन्तु बाद में केवल बारह घुड़सवारों ने नालंदा जैसे विश्रुत विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर उसके महान् ग्रंथागार को जला कर राख कर दिया। भारतीय परम्परा की कड़ी टूटने का और क्या प्रमाण चाहिए। पर ऐसा हुआ ही क्यों?

''हे देवि ! वाग्दोहरूपी ओंकार का तुम दोहन करती हो। हूँ फट आदि मंत्रों का कलन करती हो। तुमने निखिल वाक् के सार वाग्दोहरूपी ओंकार का किसके द्वारा उस शान्तातीत परावाक् से दोहन किया है।......तुम स्वतंत्र होकर भी हमारी पकड़ में आओगी। मंत्र की परातंत्र भी मंत्राधीन होकर प्रकाशित हुई हो। इस अकिंचन प्रपन्न की भी तुम माँ हो, करुणावरुणालय हो। यही 'वाग्दोह' का मूल आधार है। वाणी का सार समझ जाने पर वाणी स्वयं दुग्ध झर देती है। न समझने वाले के लिए सबके लिए हिकार आदि निरर्थक शब्द हैं परन्तु समझने वाले के लिए ये शब्द प्रभु की महिमा उद्घाटित करते हैं। जो इस प्रकार साम गान जानता है। वह अन्नवान—अन्नाद हो जाता है—इसी प्रकार जो वाणी की सप्त विध उपासना करता है वह अनुभव करता है कि वाणी द्वारा गाया गया प्रत्येक अक्षर प्रभु की महिमा का गान है। वह अन्नवान हो जाता है—अन्नाद हो जाता है। 'वाग्दोह' का यही सार है।''

[मूल्य : रु० 200.00 (सजिल्द)]

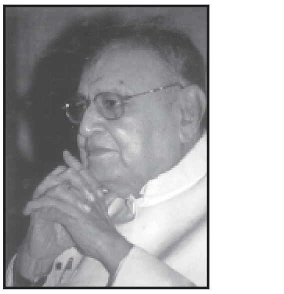

आचार्य कल्याणमल लोढ़ा का परिचय

जन्म : 28 सितम्बर, 1921 (जोधपुर) आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय (कृत कार्य), भूतपूर्व कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय, बंगीय हिन्दी परिषद् के पूर्वाध्यक्ष, भारतीय विद्या भवन के व्यवस्थापक सदस्य, अखिल भारतीय लेखक संघ के अध्यक्ष आदि अनेक शैक्षणिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध व मान्य विद्वान्। प्रमुख कृतियाँ : वाक्पथ, आधुनिक हिन्दी कविता के पात्र, वाग्मिता, इतस्तत:, प्रसाद : सृष्टि व दृष्टि, वाग्विभव, वाग्द्वार, वाग्दोह, वाक्सिद्धि आदि। प्रमुख सम्पादन : प्रज्ञाचक्षु सूरदास, भारतीय साहित्य में राधा, भक्ति तत्त्व, कामायनी, श्रीगीता तत्त्व चिन्तन, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, हिन्दी अनुशीलन, सोमतत्त्व, प्रणव तत्त्व आदि। सम्मान : विवेक पुरस्कार, साहित्य वाचस्पति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मधुवन, मध्यप्रदेश द्वारा 'कलाश्री', तुलसी मानस संस्था भोपाल द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान, राजस्थान सरकार की पत्रिका 'सुजस' द्वारा गौरव उपाधि।

आचार्य कल्याणमल लोढ़ा श्रीविद्या के उपासक थे। स्वामी प्रत्यागात्मानंदजी से मंत्र-दीक्षा प्राप्त कर इन्होंने अपनी साधना से जो सिद्धि प्राप्त की उसका वैभव वे अपनी वाग्मिता और लेखनी के माध्यम से देश-विदेश के जिज्ञासुओं के लिए पिछले छह दशकों से भी अधिक समय से सुलभ कराते चले आ रहे थे। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला आदि अनेक भाषाओं के वे विद्वान् थे। इन भाषाओं में वे अधिकारपूर्वक लिखते और बोलते थे और एक आचार्य की तरह जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दीपीठ को इन्होंने अथक परिश्रम से साजा-सँवारा और पश्चिम बंग में हिन्दी भाषा और साहित्य को अपनी तेजस्विता से मंडित किया एवं साहित्य, शिक्षा व संस्कृति के व्यापक अध्ययन से अखिल भारतीय प्रतिष्ठा प्राप्त की। यद्यपि इनकी जन्मभूमि जोधपुर, मानस-भूमि प्रयाग और कर्मभूमि बंगाल रही है तथापि उन्होंने श्री-उपासना में देश-काल के किसी बंधन को स्वीकार नहीं किया।

वाग्विभव

आज विश्व के मान्य चिंतक, वैज्ञानिक, संस्कृति और भौतिकवाद की विसंगतियों में, उपभोक्तावाद की विभीषकाओं से दूर नया क्षितिज खोज रहे हैं, वह अध्यात्म, नैतिकता, चेतना की ऊर्ध्व गति का मार्ग है। भारतीय मनीषा ने ब्रह्माण्ड और पिण्ड, समष्टि और व्यष्टि का पूर्ण तादाम्य स्थापित किया और बताया कि यह देह ही देवालय है, इसी में सभी तीर्थ विद्यमान हैं जो ऋत और सत्य की साधना करता है वह इसे पूर्णत: समझ लेता है। आज विज्ञान भी इस स्वीकार कर रहा है। डॉ० राधाकृष्णन् के अनुसार, 'जब हम अनुभव कर लेते हैं कि परब्रह्म संसार के अणु-अणु में व्याप्त हैं, तब हम संसार की हर वस्तु के एकात्म कर लेते हैं।' सरलता, सौहार्द, सौरस्य, मृदुता, नियमवादिता ही संस्कृति के महान् मूल्यों की अवधारणा है और जीवन में इनका अनुपालन कर मनुष्य कर्मबन्ध, दु:ख से छूटकर पुनर्जन्म प्राप्त नहीं करता और मुक्त हो जाता है। 'वाग्विभव' के निबन्ध भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व हैं। इन पर मानव जीवन का पुरुषार्थ निर्भर है। यों तो प्रत्येक निबन्ध पर स्वतंत्र ग्रन्थ ही अपेक्षित है पर प्रस्तुत कृति में इनका सामान्य पर मान्य रूप प्रस्तुत किया गया है। स्वनामधन्य श्री कल्याणमल लोढ़ा की प्रस्तुत कृति सच्चे अर्थों में 'वाग्विभव' है। वाणी का वैभव देखते ही बनता है। आलोच्य कृति में कुल आठ महाप्राण निबन्ध हैं। इन निबन्धों में उनकी आध्यात्मिक चेतना और शास्त्रीय बोध विस्मयावह स्तर तक पहुँच गया है। किसी भी निबन्ध को ले लें, लगता है कि किसी समृद्ध पुस्तकालय में शास्त्रवगाही और चिन्तक बैठ गया है और विवेच्य विषय से संबद्ध पुष्कल सामग्री संगृहीत कर ली है। संग्रह में जितनी व्यापकता पर चेतना केन्द्रित है—शायद अन्विति पर उतनी ही कम है। कहीं-कहीं व्याख्या परम्परा से हटकर की गई है। ऋग्वेद में 'चत्वारि वाक परिमिता पदगनं....' इत्यादि श्लोक विद्यमान है। प्रो० लोढ़ा ने ठीक लिखा है कि इसकी व्याख्या यास्क ने यज्ञपरक और पतञ्जलि ने भाषापरक की है। भाषापरक व्याख्या करते हुए 'त्रिधा वद्धः वृषभो रोदतीति' से जिन तीन स्थानों पर बँधने की बात कही गई है, वे तीन हैं—उर, कंठ और शिर। परन्तु प्रो० लोढ़ा ने 'उर' को छोड़ दिया है और इसकी जगह 'हाथ' लिख दिया है। भाषा की उच्चारण प्रक्रिया में 'हाथ' कहाँ से आ जायगा? वाग्विभवकार की दृष्टि यही है कि भारतीय संस्कृति के उन तत्त्वों का सम्यक् पर संक्षिप्त विवेचन किया जाय जो पुरातन काल से हमारी महनीयता के प्रमाण रहे हैं और जिन पर आज भी वैज्ञानिक नित नूतन दृष्टि से विचार कर रहे हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के बुनियादी घटकों— कर्म, पुनर्जन्म, मोक्ष, प्राण, भक्ति, श्रद्धा, काम तथा नीति का विवेचनार्थ चयन किया गया है। निश्चय ही वे बड़े ही महत्त्व के विषय हैं, इन पर सबकी गति सम्भव नहीं है। स्वयम् कहीं-कहीं लेखक भी व्यामुग्ध हो गया है। लेखक कहता है— ''वासना त्रिविध है— भोग, जाति और आयु'' [पृ० 12] वासना के ये भेद नहीं हैं— ये तो 'प्रारब्ध' के सन्दर्भ की बातें हैं। प्रारब्धवश जन्म होता है और जन्म होता है, भोग के लिए और तदर्थ फल देने के लिए प्रारब्ध कर्म के भोग की अल्प अवधि आयु है। लेखक की बहुश्रुतता में संदेह नहीं है। ग्रंथ की प्रचुर, पुष्कल सामग्री के कारण उसकी उपादेयतापर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लग सकता।

[मूल्य : रु० 200.00 (सजिल्द) *अप्राप्य*]

वाग्द्वार

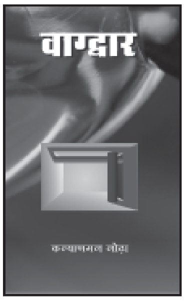

'वाग्द्वार' सांस्कृतिक बोध तथा भारतीय परम्परा से संयुक्त नये गवाक्ष खोलने वाले कवियों की रचनात्मक चेतना के वैशिष्ट्य की समीक्षा है। कवियों ने अपने कवि कर्म को संस्कृति और समाज के साथ मिलकर नवीन उद्भावनाएँ की हैं। कवि की रचनात्मक शक्ति जहाँ एक ओर इतिहास क्षण से जुड़ती है, वहीं दूसरी ओर मानवीय क्षण से। सौन्दर्यानुभूति भी जीवन के क्षणिक, परिमित और सर्वदा क्षेत्र की अभिव्यक्ति होती है। कबीर, तुलसी, सूर, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला, महादेवी और भारतीय आत्मा पं० माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे ही सनातनधर्मी कवि हैं, जिन्होंने परम्परा की जड़ता में न बँधकर उसकी नवीन प्रवहमानता को सांस्कृतिक संपुष्टता का नवीन आयाम दिया है। इन्हीं कवियों की रचनाओं का मौलिक एवं समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है 'वाग्द्वार'। ''भूमिका सहित 'वाग्द्वार' के सभी निबन्ध प्रो० लोढ़ा के यश के अनुरूप हैं। प्रो० लोढ़ा आयु और सेवाकाल की दृष्टि से हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ आचार्य हैं। उनकी प्रौढ़ि का सारभूत अंश, जो उनकी बहुपठित व्युत्पन्नता से मण्डित है, इन निबन्धों में हमें मिलता है।''— डॉ० कुमार विमल, पटना। ''अभी-अभी 'वाग्द्वार' की भूमिका 'वाग्वै पथ्या स्वस्तिः' पढ़कर समाप्त किया है। इस महत्त्वपूर्ण भूमिका और महत्त्वपूर्ण कृति के लिए आपको बधाई देता हूँ। पर इससे भी अधिक रेखांकित करने योग्य यह तथ्य है कि यह कृति विद्वानों, अध्येताओं, शोधार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों के लिए नई-पुरानी सूचनाओं का विलक्षण संग्रह है।''—गंगाप्रसाद विमल, दिल्ली

[मूल्य : रु० 250.00 (सजिल्द)]

वाक्सिद्धि

काल प्रवाह में इतिहास बोध नए क्षितिज उद्घाटित करता है। उसमें न कहीं अतीत है, न वर्तमान और न भविष्य। वह तो मानव-जीवन के विकास का नूतन और अव्याहत पक्ष है। साहित्य की संस्कृति समाज के साथ अविच्छिन्न और अपरिहार्य रूप से ग्रथित है। उसमें कहीं विश्लेष नहीं है। रचनाकार की मानसिकता कभी और कहीं भी सामाजिक मानसिकता से पृथक् और भिन्न नहीं होती। वैयक्तिक भावभूमि भी अपने मूल रूप में समाज से ही विन्यस्त है। आज साहित्य का मूल्यांकन इसी कारण समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मिथकीय विधान और नृतत्त्व-विज्ञान से मानवीय मूल्यों पर आधृत है। कलात्मक सृजन भावभूमि की नई अर्थवत्ता के साथ-साथ सौन्दर्य चेतना की नई जीवनदृष्टि प्राप्त करता है। समाज के संप्रेक्ष्य में काव्य जीवन की अन्त: यात्रा है। इसी से कवि-कर्म एक ओर संवेदनात्मक है, तो दूसरी ओर चिन्तनपरक भी। वह अकथित का कथन करता है और उसका चिन्तक पृच्छापथ का यात्री है। प्रौढ़ रचना प्रक्रिया में दोनों अभेद हो जाते हैं। यही वाक्पथ है एवं उसकी सार्थकता भी। वाक्पथ का यह संधान ही रचना का मूल तत्त्व है, और कवि की मानसिक उन्मुक्तता—बंधनहीन; जहाँ वह परम्परा से जुड़कर भी उससे दूर रह जाता है। कला चाक्षुष नहीं, मानसिक सृष्टि होती है। अतीत के धरातल पर ही वर्तमान फलता-फूलता है और भविष्य की ओर अभिमुख होता है। साहित्य के इतिहास में अतीत जड़ और अविस्मरणीय नहीं रहता। वह तो एक गवाक्ष है, जिससे वर्तमान का क्षितिज स्पष्ट दिखाई देता है। वाक्सिद्धि में मैंने ऐसे ही साधकों को रेखांकित करने का प्रयास किया है। वाक् की सिद्धि उन तप:पूत साधकों से ही होती है, जिसकी रचनाएँ वाग्विभव को प्रशस्त करके समाज की नई चेतना को प्रमाणित करती हैं। यदि ये निबन्ध गवाक्ष नहीं भी हों तो चक्षुछिद्र (आइलेट) तो होंगे ही। अतीत के सन्दर्भ में वर्तमान को परिलक्षित करते हुए कई महत्त्वपूर्ण आलेख संकलित हैं— 1. भारतीय नवजागरण : उन्नीसवीं शताब्दी, 2. हिन्दी की सार्वदेशिकता : संक्षिप्त विवेचन, 3. विस्मर्यतां किमिव बालमुकुन्दगुप्त:, 4. गाथा-गीत-परम्परा के परिप्रेक्ष्य में सुभद्राकुमारी चौहान का काव्य, 5. परम प्रेमरूपा राधा और आधुनिक हिन्दी काव्य, 6. कर्ण का अभिशप्त जीवन एवं आधुनिक हिन्दी-काव्य।

[मूल्य : रु० 160.00 (सजिल्द)]

वाग्धारा

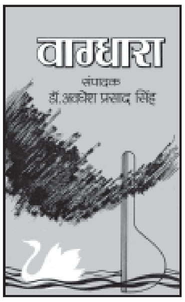

28 सितम्बर, 1986! उसी दिन अपनी आयु के पंचषष्ठि वर्ष पूर्ण कर आचार्य कल्याणमल लोढ़ा कलकत्ता विश्वविद्यालय से कृतकार्य हुए थे। उसी दिन डॉ० शंभुनाथ ने प्रस्ताव रखा कि उनके शिष्यों द्वारा एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जाये, जिसमें उनके निर्देशन में निष्पन्न किये गये शोध प्रबन्धों के अंश संकलित हों। यह एक दुष्कर कार्य था, क्योंकि आचार्य ने लगभग अड़तालीस से अधिक शोध प्रबन्धों का निर्देशन किया था। शोध प्रबन्धों के विषय साहित्य, दर्शन, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के व्यापक क्षेत्रों में फैले होने के कारण, सबको एक ग्रन्थ में समेटना कठिन था। वस्तुत: काव्य, पत्रकारिता, मिथक, साहित्येतिहास, मध्ययुगीन एवं आधुनिक साहित्य, सौन्दर्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, कथासाहित्य तथा साहित्य की अन्य विधाओं और अन्तर्विषयात्मक सभी क्षेत्रों में आचार्य लोढ़ा की अबाध गति थी। इसी का परिणाम था कि उनके निर्देशन में सम्पन्न हुए शोध कार्यों ने न केवल अनुसंधान के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया, बल्कि हिन्दी साहित्य भण्डार को भी समृद्ध किया। इतने व्यापक विषयों पर हुए शोध कार्यों में से चुनकर शोधपत्रों का संकलन तैयार करने में कई उलझनें थीं। किसे लिया जाए और किसे छोड़ा जाए, सभी तो महत्त्वपूर्ण हैं। विचार-विमर्श के उपरान्त यही तय हुआ कि प्रथमत: उन पन्द्रह प्रबन्धों से एक-एक अध्याय लिया जाए, जिन्होंने साहित्य के अध्येताओं के लिए अनुसंधान के नये गवाक्ष खोले हैं। इस योजना का सभी ने स्वागत किया और अपने निबन्ध प्रेषित किये। यह ग्रन्थ मुख्यत: साहित्यानुसन्धान के क्षेत्र में उनके निर्देशनात्मक अवदान पर केन्द्रित है।

[मूल्य : रु० 150.00 (सजिल्द)]

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद

भारतीय एवं भारतीयेतर विचारधारा में रहस्यवाद अत्यन्त प्राचीन काल से ही आधि-दैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक विवेचन के लिए सर्वमान्य रहा है। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में तो धर्म, दर्शन, योग, अध्यात्म में यह सदैव विचाराधीन रहा। आधुनिक विज्ञान ने अपनी नई गवेषणाओं से रहस्यवाद एवं रहस्यात्मक चिन्तन को ऊर्ध्वचेतना की नई दृष्टि दी है और अनेक वैज्ञानिकों ने इस पर विचार किया है। धर्म, दर्शन और अध्यात्म की दृष्टि से रहस्यवाद का सम्यक् आकलन ही इस ग्रंथ का मुख्य प्रयोजन है। यह ग्रन्थ रहस्यवाद का सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक और समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें विभिन्न भारतीय और भारतीयेतर साहित्यों में उपलब्ध रहस्यवाद को विषय विशेष की परिधि में नहीं आकलित किया गया है। प्राचीन युग से लेकर अर्वाचीन युग तक रहस्यवाद की एक अविच्छिन्न धारा प्रवहमान रही है, जिसने धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति को प्रभावित किया, जो अविवाद्य है। प्राचीन और नवीनता का यह क्रमविकास प्रस्तुत ग्रन्थ का मुख्य विषय है। विभिन्न धर्मों की रहस्यात्मक परम्पराओं में समानता विद्यमान है चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों। सभी रहस्यवादी, आध्यात्मिक दृष्टि से एक ही गोत्र के हैं, एक ही जाति के अन्तर्गत आते हैं। रहस्यवाद आत्मा का धर्म है और ब्रह्म का साक्षात्कार। मनुष्य जाति की सर्वोच्च उपलब्धि है अति श्रेष्ठ स्थान, आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर पहुँचना।

[मूल्य : रु० 250.00 (सजिल्द)]

बृहत श्लोक संग्रह

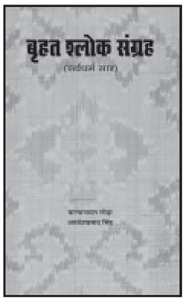

इस ग्रन्थ में प्राच्य एवं पाश्चात्य जगत के विभिन्न धर्मों के महान लोकमंगलकारी श्लोक एवं उद्धरण संगृहीत हैं। भारत के विभिन्न धर्मों के अतिरिक्त विश्व के कई महत्त्वपूर्ण धर्मों में व्यक्त आध्यत्मिक, नैतिक एवं मानव मूल्यों से सम्बन्धित श्रेष्ठ विचारों और अभ्युक्तियों को एक जगह समेकित कर समग्र मानव समाज के हितार्थ एक महत कार्य किया गया है। भारतीय वेद, पुराण, उपनिषद तथा महाभारत आदि से संस्कृत के श्लोकों का न केवल संकलन किया गया है अपितु समाज के विभिन्न भाषाभाषियों को ध्यान में रखकर और सबके लिए उपयोगी बनाने हेतु संस्कृत के श्लोकों का हिन्दी और अंग्रेजी रूपान्तरण भी किया गया है। इसी प्रकार बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि धर्मों के पदों एवं वाक्यों का भी हिन्दी एवं अंग्रेजी रूपान्तरण किया गया है। पुन: भारत के बाहर के धर्मों जैसे चीनीय, पारसी, इस्लामी, यहूदी, ईसाई आदि धर्मों के अंग्रेजी के उद्धरणों का हिन्दी रूपान्तरण भी किया गया है। बृहत श्लोक संग्रह संपूर्ण मानव समाज के लिए एक अमूल्य संपदा बनकर उनमें आध्यात्मिकता, धार्मिकता, सदाचार, सद्भाव, कर्तव्यपरायणता और मानवता का उदात्त एवं शाश्वत विचार उत्पन्न करने में सहायक होगा और यह रत्न मंजूषा विद्वानों द्वारा समादृत होगी।

[मूल्य : रु० 200.00 (सजिल्द)]

सोमतत्त्व

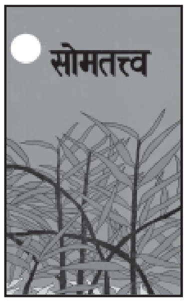

वैदिक साहित्य से लेकर ज्योतिष, आयुर्वेद, अध्यात्म, दर्शन, ब्राह्मण वाङ्मय में न जाने कितनी बार कितने रूपों और सन्दर्भों में सोम की चर्चा-व्याख्या की गई है। इस सम्पूर्ण सामग्री का आकलन किसी एक ग्रन्थ में सम्भव नहीं। अत: इस ग्रन्थ में सोमतत्त्व का सार-संग्रह संकलित कर ग्रन्थाकार प्रकाशित किया गया है। यही इस ग्रन्थ की पृष्ठभूमि है। सोम की विविधता और विभिन्नता के अन्तर्भाग में भी प्राय: समसूत्रता रही है और उसका सम्बन्ध देव-संस्कृति के साथ-साथ मानव-संस्कृति से भी जोड़ा गया, जहाँ वह स्वर्ग की प्राप्ति करने में सहायक है, वहाँ वह पृथ्वी की भी अनुपम निधि है। इन सबका संकेत ग्रन्थ के निबन्धों में स्वत: प्रमाणित है। अश्विनी कुमार इन दोनों संस्कृतियों के सेतुबन्ध हैं। सोम पर एक विशाल ग्रन्थ और गहन अध्ययन अपेक्षित है। यह संकलन तो एक गवाक्ष है जो संक्षेप में इसकी ओर संकेत करता है।

[मूल्य : रु० 100.00 (अजिल्द)]

दिव्य प्रतीक

मैंने जर्मनी के एक प्रख्यात लेखक की पुस्तक में विश्व के प्राचीन प्रतीकों के अन्तर्गत शंख के सम्बन्ध में पढ़ा, जो भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में अपना अनन्य महत्त्व लिए हुए है। तब से मेरे मन में ऐसा भाव उदित हुआ कि भारतवर्ष के प्राचीन प्रतीकों का, जो उसकी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक अस्मिता और विधा से अविच्छिन रूप में संबद्ध हैं, विशेष अनुशीलन करूँ। तदनुसार मैं शंख, तिलक, स्वस्तिक एवं दीपक पर विशेष रूप से चिन्तन, मनन एवं अध्ययन आदि में संप्रवृत्त रहा और समय-समय पर अपने विचार लिपिबद्ध करता गया।

मेरे द्वारा लिखित पाण्डुलिपि के आधार पर संस्कृत, प्राकृत, पालि आदि अनेक प्राच्य भाषाओं तथा विविध दर्शनों के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० छगनलालजी शास्त्री ने उपर्युक्त चारों विषयों के विशदीकरण के साथ बड़े ही सुन्दर रूप में इस पुस्तक का सम्पादन किया है।

आशा है, जिज्ञासु, गवेषणापरायण पाठक एवं अनुसंधित्सुवृन्द इससे लाभान्वित होंगे तथा इन पर और गहराई से चिन्तन-मनन एवं अनुसंधान में प्रवृत्त होंगे। **—कल्याणमल लोढ़ा**

[मूल्य : रु० 100.00 (अजिल्द)]

हिन्दी केवल भाषा नहीं

—प्रो० हरमेन्द्र सिंह बेदी

हिन्दी का वर्तमान सन्दर्भ बहुत महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं, वह संस्कृति एवं धर्म की भी संवाहक है। भारतीय उपमहाद्वीप में हिन्दी भाषा ने ही सबसे अधिक लोगों को प्रभावित किया है। हिन्दी के माध्यम से ही भारत की छवि शताब्दियों से बरकरार है। एशिया के देशों की ज्यादातर जानकारियाँ संस्कृत, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में सुरक्षित हैं। इस दृष्टि से एशिया के भू-भाग की सबसे बड़ी ज़बान हिन्दी ही है। आज हिन्दी विश्व की बड़ी जरूरत बन गई है। पूरी दुनिया में भारतीय बसे हुए हैं। जहाँ-जहाँ भी भारतीयों के कदम गए, हिन्दी भाषा उनका सम्बल बनकर विकास में सहायक हुई। यूरोप के 125 देशों में हिन्दी अपने पाँव जमा चुकी है। विश्व भाषा की दृष्टि से देखें तो हिन्दी आने वाले दिनों में संयुक्त राष्ट्र संघ में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा सहज ही प्राप्त कर लेगी। अकेले अमेरिका में 114 कॉलेजों, विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन चल रहा है। अमेरिका-वासियों की हिन्दी भाषा एवं साहित्य के साथ जुड़ने की होड़ लगी है। आए दिन समाचार-पत्रों में हिन्दी अध्यापकों की माँग के विज्ञापन छपते हैं। अब तो लोग यह भी कहने लगे हैं 'अमेरिका जा रहे हो, क्या हिन्दी आती है?' कोई भी बड़ी विदेशी कम्पनी हिन्दी जाने बिना मध्य एशिया में व्यापार नहीं कर सकती, क्योंकि हिन्दी अब व्यापार और बाजार की भाषा बन गई है।

अंग्रेजी भाषा का विकास भी कभी बन्दरगाहों, मंडियों एवं खुले बाजारों के बीच हुआ था। फिर हिन्दी आज 60 करोड़ लोगों की भाषा है। 60 करोड़ लोग या तो हिन्दी जानते हैं या हिन्दी बोलते हैं, या लिख समझ सकते हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी बहुत बड़ी भूमिका निभाने जा रही है। यह भूमिका सार्क-देशों की एकमात्र भाषा बनकर उभरने में छुपी हुई है। सार्क-देश अगर किसी एक भाषा पर भविष्य में निर्भर कर सकते हैं तो वह हिन्दी ही होगी क्योंकि बंगलादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका व पाकिस्तान इस भाषा को सहज में ही अपना सकते हैं। हिन्दी भाषा के बारे में एक और तथ्य भी जान लेना चाहिए कि हिन्दी विश्व में सम्पर्क भाषा बनकर भी उभरेगी। कारण स्पष्ट है कि विदेशों में बसे हुए भारतीय हिन्दी भाषा को ही संवाद की भाषा बनाकर अपना दैनिक कार्य सम्पन्न करते हैं। अमेरिका का भारतीय व्यापारी दक्षिण एशिया के व्यापारी के साथ हिन्दी भाषा के प्रयोग में ही अपनी वस्तु का क्रय-विक्रय करता है। हिन्दी भाषा की यह सम्भावना मुझे लगता है कि अगले दो दशकों में पारदर्शी बन जाएगी। विश्व स्तर पर हिन्दी के बढ़ते चरण उन आयामों को खुलेआम चुनौती भी देते हैं जिनका सीधा सम्बन्ध भाषा की परम्परा और इतिहास से होता है।

पीछे संयुक्त राष्ट्र-संघ के परिसर में आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन के कार्यवृत्त में तीन बातें उभरकर सामने आईं। हिन्दी प्राचीन भाषा है, दूसरी हिन्दी सरल व बोलचाल की भाषा है; और तीसरी कि हिन्दी का भविष्य विश्व भाषाओं के साथ जुड़ने वाला है।

अब प्रश्न यह है कि भारत में हिन्दी के सरोकार कैसे हैं? पिछले 60 वर्षों से हिन्दी की संवैधानिक स्थिति पर तो लगातार विचार हो रहा है लेकिन जिस गति से भाषा की शक्ति को आम लोगों तक पहुँचना चाहिए था वह भाव गुम-सा दिखाई देता है। कभी 15 वर्षों का विकल्प अंग्रेजी के साथ तो कभी हिन्दी के सशक्त भाषा बनने का इन्तजार। लेकिन पिछले दो दशकों से हिन्दी अपनी गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ती हुई दिखाई देती है। सरकारी प्रयत्न भी काफी हद तक हिन्दी के वर्चस्व को रेखांकित करने में सफल हुए हैं। भारत सरकार का प्रत्येक मंत्रालय हिन्दी के विकास में सक्रिय है। हिन्दी की उन्नति को तीन वर्गों में बाँटकर क्रियाशील बनाया गया है। पहले वर्ग में हिन्दी प्रदेश, दूसरे वर्ग में हिन्दी भाषा के निकट सहवर्ती प्रदेश और तीसरे वर्ग में दक्षिण के वह प्रदेश जो गैर-हिन्दी प्रदेश हैं। हैरान करने वाली बात नहीं कि आज दक्षिण के प्रदेशों में सर्वाधिक हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। दक्षिण-वासी राष्ट्र की मुख्य धारा से वंचित नहीं होना चाहते। दक्षिण के प्रत्येक विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग उसी तरह काम करते हैं जिस तरह उत्तर प्रदेश में बनारस और इलाहाबाद के विश्वविद्यालय।

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं है। सम्पूर्ण भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है। भारत को अखण्ड राष्ट्र बनाने में दो शक्तियों की अटूट सह-भागिता है—'जी०टी० रोड' और 'हिन्दी'। सच तो यह है कि हिन्दी भारत का 'हाईवे' है। भारतीय भाषाओं को जोड़ने में भी सम्पर्क भाषा हिन्दी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। 24 भारतीय भाषाओं का साहित्य लगातार अनुवाद होकर हिन्दी पाठकों तक पहुँच रहा है। 'नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया' की आदान-प्रदान योजना भारतीय साहित्य की सम्भावना को आलोकित कर रही है। भारतीय-साहित्य की पहचान भी हिन्दी के माध्यम से बनेगी। हमें हिन्दी की इस सक्रिय भूमिका को भी नहीं भूलना चाहिए। महात्मा गाँधी ने स्वदेशी आन्दोलन के दौरान 'स्वदेशी-भाषाओं' की वकालत करते हुए कहा था कि हिन्दी अलग-अलग प्रान्तों की भाषाओं को उसी तरह जोड़ेगी जिस तरह से भारतीय-संस्कृति स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रीय संस्कृति बनकर उभरेगी। हिन्दी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की भी भाषा है। सभी राष्ट्रभक्त हिन्दी से जुड़कर भारत माता को आजाद करवाने के लिए संकल्पबद्ध थे।

एशिया के देशों में सबसे अधिक हिन्दी साहित्य के पाठक हैं। कहानी, कविता, नाटक, संस्मरण एवं ज्ञान-विज्ञान की सबसे ज्यादा किताबें हिन्दी में ही छपती हैं। आज हिन्दी भाषा एवं साहित्य की गरिमा को आलोकित करने के लिए 500 पत्र-पत्रिकायें छप रही हैं। विभिन्न विषयों पर हिन्दी में हर रोज 20 किताबें छपकर बाजार में आ जाती हैं। दुनिया का कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर हिन्दी भाषा में दो-चार मानक पुस्तकें उपलब्ध न हों। विश्व-साहित्य के सन्दर्भ में अगर हिन्दी की महान कृतियों की बात करें तो हमारे पास 'रामचरितमानस', 'सूरसागर', 'पद्मावत', 'रामचन्द्रिका', 'बिहारी सतसई' जैसी मध्ययुगीन कृतियाँ हैं। आधुनिक युग में 'कामायनी', 'गोदान', 'शेखर : एक जीवनी', 'मैला आंचल', 'झूठा-सच', 'तमस', 'आधे-अधूरे', 'गुनाहों का देवता', 'सुलगती नदी' जैसी सर्वोत्तम कृतियाँ हैं। इनकी चर्चा-परिचर्चा प्राय: विश्व-साहित्य के सन्दर्भ में होती है।

वर्तमान सन्दर्भ में हिन्दी की बदलती दुनिया को समझने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति की महानता हिन्दी से जुड़ी हुई है। भारत की अलग पहचान तभी कायम रह सकती है जब हिन्दी भाषा की सूक्ष्म शक्ति को नए परिवर्तनों के बीच फिर से समझा जाए। यह समझ तभी पैदा होगी जब युवा पीढ़ी हिन्दी की विरासत को उसी तरह अपनाएगी जिस तरह कभी स्वतन्त्रता की लड़ाई के दौरान हिन्दी के वर्चस्व को स्वीकार किया गया था। आने वाले दिनों में हो सकता है कि इस भाषा को कई सांस्कृतिक तूफानों का सामना करना पड़े, क्योंकि पश्चिमी देश चाहते हैं कि भारत अतीत के उन गौरवशाली पृष्ठों को आधुनिकता की आँधी में समाप्त कर दे तथा उन रुझानों का हिस्सा बनकर अपनी भावी छवि को उभारे जिसका न अतीत हो और न भविष्य। हिन्दी भाषा का वर्तमान सन्दर्भ उस गरिमा का सरलीकरण करेगा जिसके उदात्त अर्थ अतीत और भविष्य की महानता को नये सन्दर्भों में पेश करेंगे।

(लेखक गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी में प्रो० एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं)

तथागत

(आत्मकथात्मक उपन्यास)

बाबूराम त्रिपाठी

''तथागत (बुद्ध) का जीवन स्वयं में एक श्रेष्ठ कथा है। डॉ० त्रिपाठी ने पूर्वदीप्ति के माध्यम से आत्मकथात्मक शैली में इस कथा को प्रस्तुत किया है। हिंसा और आतंक के इस युग में अहिंसा एवं शान्ति की यह कथा एक नये आयाम को दिशा देती है।''—**प्रो० युगेश्वर**

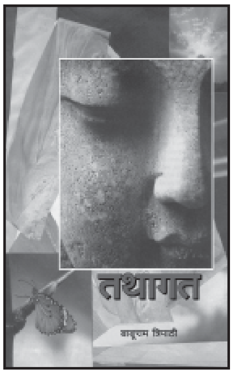

आकार डिमाई

प्रकार सजिल्द

पृष्ठ 112

ISBN : 978-81-89498-24-5 • मूल्य : रु० 100.00

(उपन्यास का एक प्रसंग)

....मनुष्य कितना क्रूर है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह किसी भी स्तर पर उतर सकता है। और तो और, अपनी कुत्सित मनोवृत्ति के कीचड़ में वह देवी-देवताओं को भी घसीटने से नहीं चूकता। मगध की वह घटना भुलाये नहीं भूलती। उन दिनों मैं मगध में ही चर्या कर रहा था। एक दिन देखा कि दो अजपाल भेड़-बकरियों के समूह के साथ जा रहे थे। उनसे मैंने यों ही पूछ दिया—''क्यों भाई, इन्हें कहाँ ले जा रहे हो?''

''मगध के राजा के यहाँ यज्ञ होने जा रहा है न! उसमें इन सब की बलि दी जायेगी।'' उनमें से एक अजपाल ने इस तरह उत्तर दिया, जैसे भेड़-बकरियों की बलि उसके लिए सामान्य बात हो।

''बिना इनको बलि की वेदी पर चढ़ाये यज्ञ पूरा नहीं होगा क्या?''

''इनकी बलि दी जायेगी, तभी तो देवी-देवता प्रसन्न होंगे और उनकी प्रसन्नता पर ही तो यज्ञ की सफलता निर्भर है।''

उस घड़ी मनुष्य की इस हिंसक प्रवृत्ति से मेरा मन घृणा से भर गया और सोचने लगा—'अकारण तो पशु भी किसी को हानि नहीं पहुँचाते, फिर मनुष्य ही क्यों इतना क्रूर हो गया है? समझ में नहीं आता कि यज्ञ के साथ पशु-बलि को कहाँ से जोड़ दिया गया। भला बताइए, देवी-देवताओं को हिंसा से क्या लेना-देना और यदि कोई ऐसा है, जिसकी प्यास निरीह प्राणियों के रक्त से बुझती है, तो उसकी पूजा-अर्चना करने की आवश्यकता ही क्या है? हिंसा से बड़ा पाप तो और कुछ है नहीं। वस्तुत: मनुष्य अपने सिर का पाप देवी-देवताओं के सिर मढ़कर निश्चिन्त हो जाना चाहता है। ठीक है, उस दिन हंस के प्राणों की रक्षा के लिए देवदत्त से शत्रुता लेनी पड़ी थी, लगता है, आज यज्ञ के पुरोहित का कोपभाजन होना पड़ेगा।' ऐसा निश्चय करके मैंने अजपालों से कहा—''ठीक है भाई, तुम्हारे साथ मैं भी चलूँगा।'' इतना कहते-कहते मेरा ध्यान एक मेमने पर पड़ा, जो पैर में चोट लग जाने के कारण बुरी तरह से लँगड़ा रहा था। मुझे उस मूक प्राणी पर बड़ी दया आयी, फलत: मैंने उसे उठाकर अपने कन्धे पर ले लिया। शुरू-शुरू में वह छटपटाया तो अवश्य, पर धीरे-धीरे जब उसकी वेदना कम हुई, तो मेरे सिर पर अपना मुँह रखकर ऊँघने लगा।

अजपालों ने मुझे चाहे जो समझा हो, पर मार्ग में देखने वाले मेरे विषय में बड़ी उल्टी-सीधी धारणा बनाये होंगे। बात भी सच है, मेरे अतिरिक्त और कौन ऐसा मनुष्य है, जो इस तरह भेड़ के बच्चे को कन्धे पर लेकर भेड़ों के समूह के पीछे-पीछे चलेगा और वह भी परिव्राजक के रूप में? फलत: लोग मुझ पर व्यंग्य ही नहीं करते थे, अपितु अपनी रहस्यमयी हँसी से औरों का भी ध्यान मेरी ओर आकृष्ट कर देते थे।

किन्तु मैंने लोगों की व्यंग्यूक्तियों की चिन्ता नहीं की, गन्तव्य की ओर बढ़ता चला गया। वैसे भी मनुष्य जब किसी अच्छे कार्य को सम्पन्न करने के लिए कटिबद्ध होता है, तो उसका ध्यान इधर-उधर जाता ही नहीं, उसे मात्र अपना लक्ष्य दिखाई देता है। यदि उसने लोगों की टीका-टिप्पणियों की चिन्ता की और अपने महान गन्तव्य पर पहुँचने के पहले ही सोच-विचार करने लगा, तब तो मिल चुका उसे अपना लक्ष्य। वस्तुत: अच्छे कार्यों को सम्पन्न करने के मार्ग में बाधाओं का आना स्वाभाविक है। मान-अपमान के न जाने कितने घूँट गले के नीचे उतारने पड़ते हैं।

इस तरह सोचते-सोचते उस यज्ञशाला में जा पहुँचा, जहाँ बलि की तैयारी चल रही थी। पुरोहित के संकेत पर एक हट्टा-कट्टा सेवक धारदार हथियार लिये सबसे स्वस्थ भेड़ को ले आने का आदेश दे रहा था। इसी बीच मैंने उसके हथियार के नीचे अपनी गर्दन प्रस्तुत करते हुए कहा—''तुम मूक और निरीह प्राणी की जगह मेरी गर्दन पर हथियार चलाओ, पर उस निरीह के प्राण न लो।'' मेरा इतना कहना कि यज्ञ का पुरोहित आग बबूला हो गया—''कौन हो तुम? बिना आज्ञा के यहाँ कैसे चले आये? जानते हो, यज्ञ में विघ्न डालने का क्या परिणाम होता है? मृत्यु-दण्ड! तुम्हारी भलाई इसी में है कि मेरे इस पुनीत कार्य में बाधा मत डालो। अन्यथा ...।''

इस चेतावनी के बाद भी मैं अपने हठ पर अड़ा रहा और पुरोहित जी से अपनी ग्रीवा पर कुठार चलवाने का अनुरोध करता रहा। इस दृश्य को देखकर राजमहल में हड़कम्प मच गयी। जो सुनता, वही भागा चला आ रहा था। महाराज बिम्बसार के कान तक जब यह बात पहुँची, तो वे जिस स्थिति में थे, उसी में भागे चले आये। मुझे कुठार के नीचे सिर नवाये देखकर वे अवाक् रह गये। कभी मुझे तो कभी पुरोहित के तमतमाये मुख को देख रहे थे। पुरोहित ने बड़े अधिकार के साथ मेरी शिकायत की—''महाराज, यह भिक्षु न जाने कहाँ से यज्ञ में विघ्न डालने के निमित्त आ टपका है। देखिये इसकी धृष्टता, इसके द्वारा व्यवधान उत्पन्न करने के चलते शुभ कार्य सम्पन्न करने में कितनी कठिनाई हो रही है। इसे यहाँ से हटाइए, जिससे यज्ञ समय से सम्पन्न हो सके।''

'महाराज स्तब्ध रह गये। कौन कहे मुझे हटाने को, उनका मुख लज्जा के कारण पीला पड़ गया। लगता था, उन्होंने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो। उन्होंने हाथ जोड़कर क्षमा माँगते हुए कहा—''भगवान्, आज आपने मेरी आँखें खोल दीं। आपने मुझे अन्धकार से निकालकर प्रकाश में खड़ा कर दिया। मैं वचन देता हूँ कि आज से मेरे राज्य में किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं होगी।'' इसके बाद उन्होंने अजपालों द्वारा लायी गयी सारी भेड़-बकरियों को मुक्त करवा दिया।

इस प्रकार मेरे जीवन का वह दिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा। मेरे एक छोटे-से प्रयास के चलते मगध राज्य में हिंसा के द्वार सदा के लिए बन्द कर दिये गये।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित

19वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

(30 जनवरी से 7 फरवरी 2010)

आपकी प्रतीक्षा करेगा।

इस अवसर पर

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अनेकानेक नई एवं विविध विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के साथ मेले में उपस्थित हो रहा है।

पुस्तकों के इस महाकुम्भ में आपका स्वागत कर हमें अत्यन्त प्रसन्नता होगी।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

पुस्तक 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक' प्रतिबन्धित

उत्तर प्रदेश सरकार ने पुस्तक 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक' पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। राज्यपाल ने सरकार के इस फैसले पर मुहर लगा दी है। गौरतलब है कि कुछ माह पूर्व लखीमपुर खीरी में डॉ० कर्ण सिंह द्वारा लिखित इस पुस्तक में पैगम्बर मोहम्मद साहब का चित्र प्रकाशित किया गया था।

रुश्दी ने फिर खड़ा किया विवाद

लगता है भारतीय मूल के ब्रिटिश लेखक सलमान रुश्दी का विवादों से चोली-दामन का साथ है। वह एक बार फिर से विवादों में घिरते नजर आ रहे हैं। ब्रिटेन की ग्रांटा पत्रिका के सम्पादक को बर्खास्त करवाने में रुश्दी का हाथ माना जा रहा है। उस सम्पादक ने रुश्दी का एक लेख प्रकाशित करने से मना कर दिया था।

पत्रिका के प्रकाशक सिग्रिड राइजिंग ने हाल ही में घोषणा की थी कि एलेक्स क्लार्क को 'ग्रांटा' के सम्पादक पद से हटाया जा रहा है, जिसके बाद साहित्य की दुनिया में खलबली मच गई थी।

'डेली टेलीग्राफ' अखबार ने रुश्दी के हवाले से कहा है ''यह सच है कि मुझे क्लार्क के इन्कार का एक मेल मिला है। मैं उसे लेकर खुश नहीं हूँ और मैंने क्लार्क से बात भी की थी और कहा था कि अगर प्रकाशक मेरा लेख नहीं छापना चाहता तो मैं उसे मजबूर नहीं करता इसलिए मैं इसे वापस लेता हूँ।''

गुजराती में 'मधुशाला'

हरिवंश राय बच्चन की कालजयी रचना 'मधुशाला' अब गुजराती में भी उपलब्ध है। गुजरात के हास्य कवि जगदीश त्रिवेदी ने 'मधुशाला' का गुजराती में भाषानुवाद किया है। अहमदाबाद में इस अनुवादित पुस्तक का विमोचन हुआ।

उर्दू सीख रहे हैं सात समंदर पार वाले

वाराणसी। विदेशियों में संस्कृत भाषा के प्रति आकर्षण आम बात हो गई है। अब ये लोग उर्दू सीखने में भी दिलचस्पी ले रहे हैं। खुद को भगवान गौतम बुद्ध का अनुयायी बताने वाले अमेरिका के डेनमायर ने बताया कि अपने देश में मित्रों से सुना था कि उर्दू बहुत मीठी जुबान है बोलने और सुनने में बहुत अच्छी लगती है। सो इच्छा हुई कि इसको सीखना चाहिए। सीखकर इस्लामी साहित्य का अध्ययन करूँगा। दो माह में कुछ-कुछ सीख लिया है। अमेरिका की मरियाना ने कहा कि यहाँ आठ माह रहना है। वापस जाकर एक नई भाषा का ज्ञान लेकर जाऊँगी ताकि दूसरों को उर्दू सिखा सकूँ। स्पेन की रोसियो ने कहा कि पिछले छह साल से उर्दू में लिखना-पढ़ना सीख रही हूँ। अब तो यह भाषा काफी आसान लगती है। उसने कहा कि लेखक नैयर मसऊद की उर्दू में कहानियों का संग्रह इत्र-ए-काफूर का स्पेनिश में अनुवाद कर चुकी हूँ। इन विदेशियों के शिक्षक रेवड़ी तालाब के डॉ० सलमान रागिब ने बताया कि यहाँ सीखने वालों में गजब की ललक देखने को मिल रही है। पहले आलिफ, बे, पे, ते से शुरुआत करते हैं। तत्पश्चात रोजमर्रा में बोलचाल के वाक्य सिखाए जाते हैं। विदेशियों को जो याद करने को दिया जाता है, बहुत ही जल्दी पूरा पाठ याद करके वे सुना देते हैं। उन्होंने बताया कि वे पिछले 10 वर्षों से इन विदेशियों को उर्दू की तालीम दे रहे हैं। अब तक 100 से अधिक विदेशी उनसे उर्दू सीख चुके हैं। इनमें सबसे अधिक अमेरिका के लोग रुचि लेते हैं। इसके अलावा अनेक देशों के नागरिकों ने उर्दू सीखा है।

बनारस रंगमंच पर—मिशन 'गिनीज बुक'

वाराणसी। जुनून आखिर रंग ले आया। भारतेन्दु और प्रसाद की नगरी काशी के धुनी रंगकर्मियों ने अपने अहर्निश नाट्य अनुष्ठान के क्रम में रविवार 22 नवम्बर को रात 9.20 बजे नागरी नाटक मंडली के मंच पर 37वें और अन्तिम नाटक की प्रस्तुति के साथ लगातार 34 घण्टों के नाट्य मंचन का विश्व रिकार्ड कायम कर एक नये इतिहास की रचना की। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का सेहरा बंधा रंग संस्था 'प्रेरणा कला मंच' के सिर जिसने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज 29 घंटों के लागातर नाट्य मंचन के कीर्तिमान को कहानियों-किस्सों का हिस्सा बना दिया। इन सभी नाटकों के एकमात्र लेखक और निर्देशक मोतीलाल गुप्त की अगुवाई में कुल 11 कलाकारों ने इस कारनामे को अंजाम दिया।

मास्को पुस्तक मेले में भारत सम्मानित अतिथि

मास्को। 22वें मास्को अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत ने अतिथि देश के सम्मान के साथ भाग लिया। मेले में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा विशेष रूप से नियोजित और लगभग एक हजार वर्ग मीटर में विस्तृत भारत मंडप में 21 भातीय भाषाओं के लगभग 100 प्रकाशकों की 1000 से अधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रदर्शन किया। यहाँ महात्मा गाँधी पर लिखी गई तथा गाँधी द्वारा लिखित लगभग 100 पुस्तकों को विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया। भारत मंडप का उद्घाटन गत 2 सितम्बर को ट्रस्ट के अध्यक्ष विपिन चन्द्र द्वारा रूस के डिप्टी प्राइम मिनिस्टर सरजई ईवानोव की उपस्थिति में किया गया था। इस अवसर पर रूसी भाषा में अनूदित ट्रस्ट की 10 पुस्तकों का विमोचन भी किया गया था। उद्घाटन समारोह का संचालन ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज्हत हसन ने किया।

स्मृति-शेष

नहीं रहे नवगीतकार अमरनाथ

साहित्य भूषण और निराला सम्मान से सम्मानित किये जा चुके नवगीतकार **अमरनाथ श्रीवास्तव** नहीं रहे। 'बहुत मुमकिन है मेरे बाद कोई आये...' जैसे गीत के सर्जक के आकस्मिक निधन पर साहित्य जगत में शोक व्याप्त हो गया। कवियों, रचनाकारों ने नम आँखों से दिवंगत को श्रद्धांजलि अर्पित की। वह 72 वर्ष के थे।

और चल दिये कुँवर पाल सिंह

हिन्दी के जाने माने समालोचक, जनवादी लेखक संघ के संस्थापक, सदस्य एवं उपाध्यक्ष और साहित्य-पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' के सम्पादक **डॉ० कुँवरपाल सिंह** का 8 नवम्बर को अवसान हो गया। वह 72 वर्ष के थे। वह काफी समय से बीमार चल रहे थे। उन्होंने दोपहर तीन बजे अवंतिका कालोनी स्थित अपने आवास पर अन्तिम साँस ली। रचनाकार, सम्पादक होने के साथ वे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कला-संकाय में डीन भी रह चुके थे। डॉ० सिंह की इच्छा के अनुसार उनका पार्थिव-शरीर जे०एन० मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया गया। प्रो० के०पी० सिंह के निधन से हिन्दी साहित्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई।

कोशकार डॉ० श्याम बहादुर वर्मा नहीं रहे

20 नवम्बर को प्रख्यात कोशकार एवं अनेक विषयों के विद्वान् डॉ० श्याम बहादुर वर्मा का निधन हो गया। 10 अप्रैल, 1932 को जन्मे डॉ० वर्मा दिल्ली विश्वविद्यालय के पी०जी०डी०ए०वी० (सांध्य) कॉलेज में हिन्दी के वरिष्ठ प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त होकर साहित्य सृजन में रत रहे। उन्होंने एम०एस-सी० (गणित), संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी तथा भारतीय इतिहास व संस्कृति में एम०ए० एवं 'हिन्दी काव्य में शक्ति तत्त्व' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। डॉ० वर्मा की प्रमुख कृतियों में 'विश्व सूक्ति कोश' (तीन खण्ड), 'क्रांतियोगी श्रीअरविंद', 'महायोगी श्रीअरविंद', 'श्रीअरविंद साहित्य दर्शन', 'श्रीअरविंद विचार दर्शन', 'हमारे सांस्कृतिक प्रतीक', 'भारत के मेले', 'भारत का संविधान', 'मर्यादापुरुषोत्ताम राम', 'राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानन्द' प्रमुख हैं। डॉ० वर्मा विगत पन्द्रह वर्षों से लगभग तीन हजार पाँच सौ पृष्ठों का 'बृहद् हिन्दी शब्दकोश' तैयार कर रहे थे, जो अपने आप में विशिष्ट प्रकार की सामग्री लिये है। डॉ० शर्मा ने 1953 में अकेले ही हिमालय को पैदल पार कर तिब्बत की यात्रा की। 'केन्द्र भारती' मासिक (विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी) के सम्पादक तथा भारतीय अनुशीलन परिषद्, बरेली (उत्तर प्रदेश) के निदेशक रहे।

सम्मान-पुरस्कार

डॉ० नाहीद को 'विक्रम कालिदास पुरस्कार'

विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन) द्वारा आयोजित 52वें अखिल भारतीय कालिदास समारोह में वाराणसी की विदुषी **डॉ० नाहीद आबिदी** को मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा द्वारा 'विक्रम कालिदास पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय ने विगत माह डॉ० आबिदी को डी०लिट्० की उपाधि प्रदान की है। डॉ० आबिदी वर्तमान में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की सदस्य हैं।

प्रो० रामदेव को 'शिखर' व बसर को 'साहित्य' सम्मान

श्रुति कीर्ति स्मृति संस्थान बरहज, देवरिया ने एक अंतराल के बाद पुनः देश स्तर पर अपनी लेखनी से सामाजिक सरोकार, विचार और भाषा को संबल देने वाले साहित्यकारों को 'श्रुति कीर्ति सम्मान' देने का निर्णय लिया है। इसके अनुक्रम में संस्था द्वारा गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार **प्रो० रामदेव शुक्ल** को उनके उपन्यास 'ग्राम देवता' के लिए वर्ष 2009 का 'श्रुति कीर्ति शिखर सम्मान', शायर **राजेश सिंह बसर** को उनकी कृति 'एक ही चेहरा' के लिए 'श्रुति कीर्ति साहित्य सम्मान' तथा पर्यावरण संरक्षण में अपने निजी संसाधनों से बेहतर योगदान के लिए **चन्द्रभूषण तिवारी** को 'श्रुतिकीर्ति सेवा सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा।

उर्दू अकादमी के पुरस्कारों की घोषणा

उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने वर्ष 2008 में प्रकाशित पुस्तकों के लिए पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। अकादमी ने वर्ष 2008-09 के 'मौलाना अबुल कलाम आजाद पुरस्कार' के लिए जाने माने शायर नोएडा के **रतन सिंह** के नाम की घोषणा की है।

पुरस्कृत पुस्तकें—फरहंग कलामे मोमिन, डॉ० सलमान रागिब, वाराणसी, मुतअल्लिकाते शिबली, डॉ० मो० इलियास, आजमगढ़, हुरमतुल इकराम हयात और कारनामे, डॉ० जहीर मोहम्मद, मीरजापुर, लफ्ज-लफ्ज निशतर, राजकुमार सचान, गाजीपुर, इस छोटे से लम्हे में, सरफराज नवाज, आजमगढ़ और तहे दस्त, मो० हसन शाहिद आजमी, आजमगढ़।

मणीन्द्रनाथ अग्रवाल को जी०डी० बिरला पुरस्कार

वर्ष 2009 का घनश्यामदास बिरला पुरस्कार आई०आई०टी० कानपुर के कम्प्यूटर साइंस व इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर **मणीन्द्रनाथ अग्रवाल** को दिया जाएगा। यह सम्मान उन्हें कम्प्यूटर साइंस के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जा रहा है। 1991 में स्थापित पुरस्कार देश में ही रहकर शोध कर रहे 50 साल से कम उम्र के वैज्ञानिक को दिया जाता है। पुरस्कार की रशि डेढ़ लाख रुपये है।

प्रो० वीरभद्र मिश्र को सामापा वितास्ता सम्मान

सोपोरी एकेडमी ऑफ म्यूजिक एंड परफार्मिंग आर्ट (सामापा) ने भारतीय संस्कृति व संगीत सेवा के लिए संकटमोचन मन्दिर के महंत **प्रो० वीरभद्र मिश्र** को 'सामापा वितास्ता' सम्मान के लिए चुना है।

इस सम्मान के अन्तर्गत प्रो० मिश्र को 50 हजार रुपये, अंगवस्त्रम् व प्रशस्ति पत्र दिए जाएंगे। इसके साथ ही शास्त्रीय संगीत (वायलिन) के लिए डॉ० एल० सुब्रह्मणियम को भी सम्मानित किया जाएगा। इसी क्रम में कश्मीरी लोक संगीत की गायिका श्रीमती राजबेगम को सामापा शेरे कश्मीर शेख मो० अब्दुल्लाह सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

विशेष उदय सम्मान परिचय दास को

भोजपुरी व हिन्दी के जाने-माने कवि-आलोचक, चिंतक व हिन्दी अकादमी तथा मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार के सचिव **परिचय दास** (जिनका मूल नाम डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव है) को दिल्ली के एल०टी०सी० सभागार में 'विशेष उदय सम्मान' प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें साहित्य में असाधारण कार्य के लिए दिया गया। परिचय दास की भोजपुरी-हिन्दी द्विभाषी कविता की दस से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें 'धूसर कविता', 'कविता चतुर्थी', 'संसद भवन की छत पर खड़ा हो के' इत्यादि महत्त्वपूर्ण व चर्चित हैं। उन्हें इसके पहले 'दलित साहित्य अकादमी सम्मान', 'एडीटर्स च्वाइस सम्मान' तथा 'भोजपुरी कीर्ति सम्मान' प्राप्त हो चुके हैं।

लोक कला-साहित्य सम्वर्द्धन पुरस्कार डॉ० कपिल तिवारी को

चम्बलांचल की लोक कला-संस्कृति, संस्कार-सभ्यता के अनुसंधाता एवं पोषक स्वर्गीय डॉ० भगवान सहाय शर्मा की स्मृति में प्रदान किया जाने वाला राज्य स्तरीय लोककला साहित्य सम्वर्द्धन पुरस्कार, मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला अकादमी के अध्यक्ष **डॉ० कपिल तिवारी** को मुरैना जिले की अम्बाह तहसील में आयोजित समारोह में, संस्थापक-संयोजक डॉ० सुधीर आचार्य, कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति डॉ० विजय सिंह तोमर, ललित निबन्धकार, डॉ० श्रीराम परिहार, युवा अधिकारी रासेयो क्षेत्रीय केन्द्र भोपाल द्वारा इकहत्तर सौ रुपये की राशि, प्रतीक चिह्न, माँ शारदा की प्रतिमा, शाल, श्रीफल और पुस्तकें भेंट कर प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में डॉ० सुधीर आचार्य द्वारा सम्पादित कृतियाँ, 'यादों के झरोखे से' एवं डॉ० भगवान सहाय शर्मा का 'सृजन लोक' का विमोचन भी हुआ।

हिन्दीतर विद्वान सेवी डॉ० निर्मला, डॉ० मधु, प्रो० एन०जी० देवकी पुरस्कृत

समेकित भारतीय साहित्य परिषद्, बस्ती के चौधरी चरण सिंह पी०जी० कालेज के सभागार में हिन्दी सेवी डॉ० निर्मला मौर्या, डॉ० मधु धवन, प्रो० एन०जी० देवकी को पुरस्कृत किया गया।

'स्व० डॉ० मधुर नारायण मिश्र स्मृति सम्मान-2009', दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, उच्च शिक्षा एवं शोध की हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० निर्मला मौर्या** को प्रदान किया गया, पुरस्कार स्वरूप 5100/- रुपये नगद, उत्तरीय, सम्मान प्रमाण-पत्र दिये गये। परिषद् का दूसरा 'स्व० श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा स्मृति सम्मान-2009', अध्यक्ष हिन्दी विभाग, स्टैला मैरिस कालेज, चेन्नई की **डॉ० मधु धवन** को उनके काव्य संग्रह 'अमृतमयी' हेतु पुरस्कार स्वरूप 2500/- रुपये नगद, उत्तरीय, सम्मान प्रमाण-पत्र दिया गया। परिषद् का तीसरा एवं अन्तिम सम्मान 'स्व० श्रीमती सुभावती देवी स्मृति सम्मान-2009' प्रख्यात हिन्दी प्रचारक एवं समाजसेवी, हिन्दी विभाग कोचीन विश्वविद्यालय की **प्रो० एन०जी० देवकी** को प्रदान किया गया। उन्हें पुरस्कार स्वरूप 2500/- रुपये नगद, उत्तरीय, सम्मान प्रमाण-पत्र दिये गये। सम्पूर्ण सम्मान, प्रख्यात समीक्षक पूर्व हिन्दी-विभागाध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो० अनन्त मिश्र एवं प्रो० चितरंजन मिश्र ने प्रदान किये।

इस समारोह के मुख्य अतिथि कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० इकबाल अहमद थे।

कुलदीप नैयर को जयप्रकाश सम्मान

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लेंग्वेजेज के सभागार में जयप्रकाश नारायण फाउंडेशन द्वारा आयोजित समारोह में गाँधी व जयप्रकाश नारायण की विचारधारा को पत्रकारिता के माध्यम से आजीवन प्रोत्साहन देने के लिए वरिष्ठ पत्रकार **कुलदीप नैयर** को जेपी फाउंडेशन के वर्ष 2009 के सम्मान से सम्मानित किया गया।

शताब्दी वर्ष स्मृति पुरस्कार

श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति द्वारा शताब्दी वर्ष में दो पुस्कारों की घोषणा की गई है। पहला एक लाख रुपए का अखिल भारतीय स्तर का पुस्कार, दूसरा पचास हजार रुपए का प्रादेशिक पुरस्कार, जो मध्य प्रदेश के किसी साहित्यकार को प्रदान किया जाएगा। ये पुरस्कार

प्रतिवर्ष दिए जाएँगे। साहित्यानुरागी इस सन्दर्भ में सम्भावित साहित्यकारों के नाम सुझा सकते हैं। पता : 11, रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, इंदौर-452001, फोन : 0731-2516657

डॉ० विन्देश्वर पाठक को स्टॉकहोम वॉटर प्राइज

स्वीडन में 'वर्ल्ड वॉटर वीक' (विश्व-जल-सप्ताह), समारोह में सुलभ-स्वच्छता एवं सामाजिक सुधार-आन्दोलन के संस्थापक डॉ० विन्देश्वर पाठक को स्वीडन के महामहिम राजकुमार कार्ल फिलिप द्वारा एक भव्य समारोह में स्टॉकहोम वॉटर प्राइज प्रदान किया गया। यह पुरस्कार पर्यावरण और जल के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार के समकक्ष है।

दीपकजी का अभिनन्दन

वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ० देवेन्द्र दीपक की 75वीं वर्षगाँठ पर आयोजित अमृत महोत्सव हिन्दी भवन में मनाया गया। मध्य प्रदेश हिन्दी लेखिका संघ, अखिल भारतीय साहित्य परिषद की प्रादेशिक शाखा और मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की संयुक्त पहल पर आयोजित इस कार्यक्रम में शहर की विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्थाओं ने भावभीना सम्मान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के संस्कृति मन्त्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने श्री दीपक को शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न भेंट किया।

विज्ञान लेखकों को 'अनुसृजन सम्मान'

वैज्ञानिक साक्षरता के लिए युवा पीढ़ी की सहभागिता आवश्यक है। युवा पीढ़ी की सहभागिता बढ़ाने के लिए वर्ष 2009-10 देश में वैज्ञानिक साक्षरता दशक के रूप में मनाया जाएगा। यह घोषणा राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के वरिष्ठ सलाहकार डॉ० अनुज सिन्हा ने की। वे मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिक परिषद (मेपकास्ट) के सहयोग से आईसेक्ट द्वारा आयोजित अनुसृजन सम्मान समारोह में बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता मेपकास्ट के महानिदेशक डॉ० प्रमोद वर्मा ने की। कार्यक्रम में 13 विज्ञान लेखकों को 'अनुसृजन सम्मान' से सम्मानित किया गया। इन लेखकों में डॉ० पी०के० मुखर्जी नई दिल्ली, डॉ० कपूरमल जैन भोपाल, डॉ० मनमोहन बाला नई दिल्ली, डॉ० कालीशंकर एवं राकेश शुक्ला हैदराबाद, संतोष शुक्ला भोपाल, संगीता चतुर्वेदी नई दिल्ली, अरुण कुमार पाठक इलाहाबाद तथा डॉ० विजय कुमार उपाध्याय बोकारो शामिल हैं।

समारोह के दूसरे चरण में विषयों के रचनात्मक लेखन तथा सम्भावनओं पर विचार-विमर्श किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ० अनुज सिन्हा ने की।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० अहिल्या मिश्र को भारतभाषा भूषण सम्मान प्रदत्त

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन केन्द्रीय सभा भोपाल द्वारा त्यागराज गान सभा, चिक्कडपल्ली, हैदराबाद में पुरस्कार एवं सम्मान समारोह का आयोजन सम्पन्न हुआ। इसे अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन की आन्ध्र प्रदेश शाखा ने आयोजित किया।

मुख्य अतिथि ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहीता श्री सी० नारायण रेड्डी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले पचास वर्षों से विश्वसहिति संस्था से सहयोग कर रहे हैं। अखिल भारतीय भाषा एवं साहित्य सम्मेलन विश्व सहिति संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान मे आज हिन्दी एवं तेलुगु के शीर्षस्थ साहित्यकारों को ये सम्मान एवं पुरस्कार दिए जा रहे हैं। जहाँ कविता है वहाँ साहित्य है, भाषा है, भाषात्मक एकता का उत्तम उदाहरण है।

महास्वामी शान्तावीर ने अध्यक्षीय टिप्पणी में संस्था के विस्तार एवं कार्य की जानकारी देते हुए पुरस्कार एवं सम्मान ग्रहीताओं को आशीष दिया। इस आयोजन में **डॉ० अहिल्या मिश्र** को 'भारत-भूषण', **डॉ० गुणमाला सोमाणी** को 'साहित्य श्री सम्मान' एवं **श्री जी० सांब शिवराव** को 'सरस्वती सम्मान' प्रदान करते हुए सभी को शॉल, श्रीफल, प्रमाण-पत्र द्वारा समादृत किया गया।

'स्पेनिन साहित्य गौरव सम्मान' आयोजित

वर्ष 2008-09 का 'स्पेनिन साहित्य गौरव सम्मान' कविता पुस्तक 'अंधी यात्राएँ' के लिए श्री राजेन्द्र नागदेव को, 'आशियाने की बातें' के लिए रीवा की श्रीमती इंदु श्रीवास्तव को और 'दु:ख पतंग' के लिए गोरखपुर की श्रीमती रंजना जायसवाल को प्रदान किया गया। इन्हें प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न के साथ-साथ 11,001 तथा 5,001 रुपए की राशि प्रदान की गई। समारोह के अध्यक्ष थे वरिष्ठ सम्पादक-पत्रकार श्री बलवीर दत्त तथा मुख्य अतिथि थे भाषाविज्ञानी डॉ० दिनेश्वर प्रसाद।

कविवर उदय प्रताप सिंह सम्मानित

1 नवम्बर को अलवर में दिल्ली के कवि श्री उदयप्रताप सिंह को आस्था साहित्य संस्थान अलवर की ओर से 'त्रिवेणी साहित्य पुरस्कार' से अलंकृत किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें ग्यारह हजार रुपए की राशि श्री संजय ड्रोलिया द्वारा प्रदान की गई। संस्थान के अध्यक्ष श्री बलवीर सिंह करुण, पद्मश्री सूर्यदेव बारैठ एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री महेन्द्र शास्त्री ने उन्हें शॉल, सम्मान-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए।

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

कथाकार स्व० शैलेष मटियानी की स्मृति में दिए जाने वाले 'चित्रा कुमार युवा कथाकार पुरस्कार' के लिए हिन्दी के वरिष्ठ लेखकों, सम्पादकों तथा पाठकों से नाम आमन्त्रित किए जाते हैं। लेखक/लेखिका की आयु अधिकतम 35 वर्ष होनी चाहिए। अनुशंसा के साथ अनुशंसित कहानी संग्रह की दो प्रतियाँ भेजें। अनुशंसा 31 दिसम्बर, 2009 तक मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल के पते पर भेजें।

'मूर्तिदेवी पुरस्कार' घोषित

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित वर्ष 2006 का 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' हिन्दी के लेखक प्रो० कृष्णबिहारी मिश्र को उनकी रचना 'कल्पतरु की उत्सवलीला' के लिए तथा वर्ष 2007 का पुरस्कार कन्नड़ लेखक और केन्द्रीय विधि व न्याय मंत्री श्री वीरप्पा मोइली को उनकी रचना 'रामायण अन्वेषणम्' के लिए देने की घोषणा की गई है। पुरस्कार स्वरूप दो लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र और वाग्देवी की प्रतिमा प्रदान की जाएगी। 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' का चयन करने वाली समिति के अध्यक्ष श्री टी०एन० चतुर्वेदी थे और चयन समिति के दूसरे सदस्यों में सर्वश्री सत्यव्रत शास्त्री, के० सच्चिदानन्द, प्रतिभा राय, ऋषभ चंद्र जैन, अखिलेश जैन और रवीन्द्र कालिया शामिल थे।

कुंदकुंद भारती पुरस्कार समारोह सम्पन्न

14 नवम्बर को दिल्ली के उपराज्यपाल महामहिम श्री तेजेन्द्र खन्ना ने कुंदकुंद भारती संस्था के खारवेल भवन, सत्संग विहार में आयोजित एक कार्यक्रम में भारतीय ज्ञानपीठ के मुख्य प्रकाशन अधिकारी डॉ० गुलाब चंद जैन और जयपुर स्थित अपभ्रंश शोध की शोध पत्रिका 'जैनविद्या' की सहयोगी सम्पादक कुमारी प्रीति जैन को सम्मानित किया। पुरस्कार में एक लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र, शॉल, माला, श्रीफल एवं स्मरण पदक दिया गया। कुंदकुंद भारती यह पुरस्कार प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, जैन साहित्य में प्रचार-प्रसार एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु देती है।

सुरेन्द्र दुबे को 'काका हाथरसी पुरस्कार'

17 नवम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजस्थान के हास्य कवि-व्यंग्यकार श्री सुरेन्द्र दुबे को हास्य और व्यंग्य के क्षेत्र में विशिष्ट रचनात्मक योगदान के लिए वर्ष 2008 का 'काका हाथरसी पुरस्कार' उत्तर प्रदेश के गोवर्धन (गिरिराजधाम) में प्रदान किया गया। काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस द्वारा प्रतिवर्ष एक सर्वश्रेष्ठ हास्य कवि को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। पुरस्कार के अन्तर्गत ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी एवं प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० लक्ष्मीनारायण गर्ग ने कवि दुबे को शॉल, श्रीफल, एक लाख रुपए नकद और 'हास्य रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। समारोह में देश भर के अनेक कवि, लेखक, साहित्यकार एवं पत्रकार उपस्थित थे।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' परम श्रद्धेय स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी के सिद्धान्तों/नीतियों के अनुकूल यशस्वी छवि बनाए हुए है, यह प्रसन्नता की बात है। हिन्दी जगत की प्राय: सभी गतिविधियाँ तथा सुसंगत लेख, कविता, आवश्यक जानकारियाँ पत्रिका की बहुख्यात विशेषताएँ हैं।

—मोतीलाल जैन 'विजय'
कटनी, मध्य प्रदेश

'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से लीलाधर जगूड़ी के समीक्षात्मक आलेख 'हिन्दी को बाजारू मत बनाइए' का अद्यतन अध्ययन किया। आलेख ज्वलंत और श्रेष्ठ है क्योंकि हिन्दी के भविष्य के प्रति यह चिंतन अपरिहार्य है। जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक चैनलों पर जो हिन्दी प्रयुक्त की जा रही है वह चलताऊ हिन्दी है। वह जनमानस पर अपना स्थाई प्रभाव छोड़ने में नाकामयाब है व उसमें व्याकरणिक नियमों की अवहेलना भी जारी है।

अत: लीलाधर जगूड़ी की चेतावनी हिन्दी के भविष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी साबित होगी क्योंकि भाषिक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण कौशल में वाक्यों की संरचना, शब्दकोष एवं राजभाषा आयोग के नियमों की सम उपयोगिता है। वहीं वाचिक अभिव्यक्ति के लिए स्वराघात एवं बलाघात का भी ध्यान रखना अनिवार्य है।

यदि समय रहते इस ज्वलंत समस्या पर दृष्टिपात नहीं किया गया तो हिन्दी का यह स्वरूप साहित्य और समाज दोनों के लिए घातक साबित होगा। **—प्रो० संदीप शर्मा**
अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह
जिला-मुरैना (मध्य प्रदेश)

'भारतीय वाङ्मय' का सितम्बर-अक्टूबर 2009 का संयुक्तांक प्राप्त हुआ। पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई कि सम्पादकीय द्वारा अपने साहित्य और संस्कृति की पड़ताल करने की अपेक्षा की गई है ताकि हमारे सांस्कृतिक प्रतिमान जीवन्त हो उठें। 'चन्द्रधर शर्मा गुलेरी' की संवेदनशीलता, न्यायप्रियता एवं शिशुप्रियता को रेखांकित करना ही उनकी पुण्यतिथि पर सच्ची श्रद्धांजलि देना है। 'आज की हमारी शिक्षा' नैतिक-मूल्यों, जीवनादर्शों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के हरण और क्षरण की करुण कहानी कह रही है—का संकेत 'हंसकुमार तिवारी' के वक्तव्य में स्पष्ट झलकता है। संसद में साहित्यकारों का स्थान सिनेमा कलाकारों ने ले लिया है जो नि:सन्देह ही भारत जैसे लोकतांत्रिक प्रणाली के राष्ट्र के लिए चिंता और चिंतन का विषय है।

'भारतीय संस्कृति की भूमिका', 'कला' आदि पुस्तकों का परिचयात्मक विवरण पाठकीय स्पंदन का कारक सिद्ध हुआ है। संगोष्ठी लोकार्पण, पत्र, स्मृति शेष आदि स्तम्भ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं जिनमें संवेदनशीलता के तत्त्व सदा विद्यमान रहते हैं। पत्रिका अपनी साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठान की यात्रा सहजता, सुगमता एवं सरलता के सन्मार्ग पर करती हुई सतत सक्रियता की भूमिका निर्वहन कर रही है। अस्तु।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

'भारतीय वाङ्मय' पाकर प्रसन्नता हुई। 'पुस्तक' कविता काफी पसन्द आयी। मीडिया तंत्र की कमियों को उजागर करता सम्पादकीय काफी यथार्थपूर्ण है। साहित्यकारों को हाशिए पर ले जाने वाला यह 'तंत्र' जिस खास किस्म का साहित्यकार पैदा कर रहा है, वह समस्त समाज के लिए चिंतनीय है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा, राजभाषा अथवा शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए हिन्दी प्रेमियों एवं राष्ट्रहित के चिंतकों को संसद भवन के समक्ष धरने पर बैठना होगा, आन्दोलन करना होगा।

बहरहाल, आपको इस बात के लिए मैं धन्यवाद करता हूँ कि नई-पुरानी पुस्तकों का परिचय देते हुए हमें बार-बार उसकी याद दिला रहे हैं। साहित्य प्रेमी इस प्रकार पुस्तकों के कलेवर से परिचित होकर उसे खरीदने हेतु उन्मुख होंगे। इस स्वस्थ परम्परा के पालन हेतु हार्दिक धन्यवाद। **—डॉ० हरेराम पाठक**
डिगबोई महिला महाविद्यालय
पो० डिगबोई (असम)

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
कुछ प्रमुख पाठ्य ग्रन्थ व पेपरबैक पुस्तकों के नवीन संस्करण

आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 2010 (षष्ठ) 150
आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 2010 (प्रथम) 150
भारतीय संगीत का इतिहास *ठा० जयदेव सिंह* 2010 (द्वितीय) 250
राष्ट्रगौरव सम्पादक : *डॉ० मुकेश प्रताप सिंह* *डॉ० साधना द्विवेदी* 2010 (प्रथम) 90
इतिहास-दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* 2010 (अष्टम) 150
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *श्रीराम गोयल* 2010 (दशम) 150
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 2010 (चतुर्थ) 50
भाषिकी के प्रारम्भिक सिद्धान्त *डॉ० एच० परमेश्वरन* 2010 (द्वितीय) 30
हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना *डॉ० अर्जुन तिवारी* 2010 (द्वितीय) 160
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 2010 (द्वादश) 120
हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र *सम्पा. डॉ० चौथीराम यादव* 2010 (चतुर्थ) 30
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 2010 (पंचम) 70
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 2010 (एकविंश:) 120
हिन्दी उपन्यास *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 2010 (द्वितीय) 100
ग़बन *प्रेमचंद* 2010 45
मध्ययुगीन काव्य साधना *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 2009 (तृतीय) 120
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग, भाग-3 *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 2010 (चतुर्थ) 50
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 2, 3 व 9) *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 2010 (षष्ठ) 35
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त-कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 2010 (अष्टम) 200
लघुसिद्धान्त-कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 2010 (द्वितीय) 20
संस्कृत-शिक्षा-1 *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 2010 (नवम) 25
मेघदूतम् *डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी* 2010 (पंचम) 50
पाणिनीयशिक्षा *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 2010 (द्वितीय) 24
भारत के महान योगी (तेरह-चौदह) *विश्वनाथ मुखर्जी* 2010 (द्वितीय) 100
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास *डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी* 2010 (तृतीय) 250
English Poetry Edited by : Prof. P.N. Singh 2009 (1st) 70
Waves and Oscillations Dongre and Bhattacharya 2010 180
University Practical Physics Bhattacharya & Others 2010 (2nd) 90
Fishes of U.P. & Bihar Gopalji Srivastava 2010 (13th) 140
Fundamentals of Educational Research Dr. K.P. Pandey 2010 (3rd) 250
Teaching of English in India Dr. K.P. Pandey & Dr. Amita 2010 (4th) 160

■

संगोष्ठी/लोकार्पण

भारतीय विज्ञान वैभव का लोकार्पण

काशी। भारतीय विज्ञान की अमूल्य धरोहर 'भारतीय विज्ञान वैभव' पुस्तक का लोकार्पण भारत सरकार के पूर्व मानव संसाधन मंत्री, भारतीय परम्पराओं के व्याख्याता, वैज्ञानिक व सांसद प्रो० मुरलीमनोहर जोशी ने विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित के०एन० उडुप्पा हाल में किया। समारोह की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह ने की।

पुस्तक में '30 पुराने व 9 नये वैज्ञानिकों' का जीवन, उनका दर्शन और शोध का उल्लेख किया गया है।

भारतीय संस्कृति में है सम्मान की भावना

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी में सिक्किम के राज्यपाल वी०पी० सिंह के दो ग्रन्थों 'इंडियाज कल्चर' और 'बहुधा एंड द पोस्ट 9/11 वर्ल्ड' पर विगत दिनों विद्वानों ने चर्चा की। कुलपति प्रो० नवांग समतेन ने महामहिम को अंगवस्त्रम और स्मृति चिह्न देकर अभिनंदन किया।

इस मौके पर राज्यपाल श्री सिंह ने कहा कि इंडियाज कल्चर में एक-दूसरे की सम्मान की भावना समाहित है। इसमें यह दिखाया गया है कि सभी संस्कृतियों का अपना-अपना स्थान है। किसी प्रकार का टकराव न हो इसलिए सौहार्दपूर्ण प्रयास करना चाहिए। कहा कि ग्रन्थ लिखते समय दुविधा थी कि ईश्वर एक है या अनेक। निष्कर्ष निकला कि बहुधा ही इसका समाधान है। जिसका अर्थ है दूसरों के विचारों को सम्मान देना। उन्होंने कहा कि उनका ग्रन्थ वेद से प्रभावित है। मैंने एक दीप जलाया है मेरी चाहत है कि इसे आप सभी आगे बढ़ाएँ।

साहित्य के प्रति बच्चों में मनोविज्ञान जरूरी

सोनभद्र। नई पीढ़ी के आँखें खोलते ही घर में पूरी ताकत से इलेक्ट्रानिक मीडिया मौजूद मिला। इसने साहित्य का नुकसान किया। इस पीढ़ी को बताया ही नहीं गया कि काम के बाद टीवी देखना जरूरी नहीं है। ऐसा इसलिए हुआ कि अभिभावक खुद टीवी के साथ जुड़ गए थे और टीवी के बाजारवाद के बारे में किसी ने सोचा ही नहीं। साहित्य से दूर हो रहे युवाओं के प्रति यह चिंता लेखिका चित्रा मुद्गल ने जताई। विंध्य महिला महाविद्यालय में ठाकुर प्रसाद सिंह स्मृति ग्रन्थालय के लोकार्पण समारोह में यहाँ पहुँची चित्रा मुद्गल ने कहा साहित्य को लेकर बच्चों में जो ललक, मनोविज्ञान और अनिवार्यता चाहिए वह नहीं बनी। उन्हें इसकी जानकारी नहीं दी गई कि चैनलों पर उपलब्ध जानकारियाँ तात्कालिक हैं। तात्कालिकता तात्कालिक अनुभव तक ही रहती है। चेतना के अभाव को कुरेदने के अभाव में नई पीढ़ी ने स्वाभाविक रूप से साहित्य से मुँह मोड़ लिया है, लेकिन अब युवाओं को भी टीवी चैनलों, इंटरनेट और लिखे गए शब्द शक्ति का अंतर स्पष्ट होने लगा है।

जनतांत्रिक चेतना के कवि थे धूमिल

सत्य व तर्क की जमीन पर खड़े होकर व्यवस्था के खिलाफ निर्भीक घोषणा करने का साहस जनकवि धूमिल ने किया। सुदामा पाण्डेय धूमिल, जनतान्त्रिक चेतना के सबसे बड़े कवि थे। धूमिल जयंती पर सोमवार, 9 नवम्बर 2009 को उनके पैतृक गाँव में आयोजित समारोह में जुटे साहित्यकारों व समाजसेवियों ने यह बात कही।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ० आर०के० सिंह ने कहा कि जनतंत्र आज एक तमाशा बनकर रह गया है जिसकी खूबियों व खामियों से वाकिफ धूमिल ने इस मर्म को अपनी कविताओं का विषय बनाया था। उनकी कविता असहायों के दर्द को बहुत बारीकी से उजागर करती है। धूमिल ने अपने लोगों के साथ मिलकर उनकी वर्गचेतना की जमीन पर ही लड़ाई का मोर्चा खोला।

तथ्य की जगह सत्य का स्थान्तरण जरूरी

पिछले वर्षों में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं ने अपने स्वरूप तेजी से बदले हैं. अत: उनके बीच जिस अन्तर की बात आज हम कर रहे हैं वह बनावटी हैं। लेकिन एक विधा से दूसरी विधा में स्थान्तरण की इस प्रक्रिया में 'तथ्य के स्थान्तरण' की जगह 'सत्य के स्थान्तरण' की जरूरत है यह विचार प्रसिद्ध इतिहासकार और आलोचक प्रो० सुधीर चन्द्र ने हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'आलोचना का स्वपक्ष' पर आयोजित विचार गोष्ठी में अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए व्यक्त किए।

अकादमी के उपाध्यक्ष प्रो० अशोक चक्रधर ने कहा कि हम आजकल आलोचना में रचनाकार को मारने की हद तक जा रहे हैं।

साहित्यिक गीतों की कव्वाली में प्रस्तुति

निराला की भोजपुरी कविता और कबीर, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, हरिवंशराय बच्चन, राजकमल चौधरी का कव्वाली से क्या नाता है? हिन्दी साहित्य प्रेमियों को यह सवाल चकित भी कर सकता है और उलझन में भी डाल सकता है लेकिन हिन्दी और मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली ने इस पहेली को पूछा भी और खुद जवाब भी दिया। अपने तरह के अनूठे और सम्भवत: विश्व में पहली बार हुए इस प्रयोग में 26 अक्टूबर 09 को इन महत्त्वपूर्ण कवियों की रचनाओं को कव्वाली के रूप में प्रस्तुत किया दिल्ली के प्रसिद्ध कव्वाल अब्दुर्रहमान ने जो दिल्ली विश्वविद्यालय से उर्दू में एम०फिल० हैं और पी-एच०डी० कर रहे हैं।

'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ नइ'

भारत पाक विभाजन पर लिखे गये अभी तक के सबसे महत्त्वपूर्ण और चर्चित नाटक 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ नइ' का मंचन हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने 23 एवं 24 अक्टूबर, 2009 को श्रीराम सेन्टर में प्रदर्शित किया। वरिष्ठ रंगकर्मी श्री राजेन्द्र नाथ द्वारा निर्देशित यह नाटक श्रीराम कला मंडल ने प्रस्तुत किया। प्रख्यात लेखक और हिन्दी अकादमी के 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित प्रो० असगर वजाहत द्वारा लिखित इस नाटक की प्रस्तुति पर अकादमी के उपाध्यक्ष प्रो० अशोक चक्रधर ने कहा कि ''साम्प्रदायिक सौहार्द का संदेश देते हुए यह नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना भारत पाक विभाजन, जिसकी विषय वस्तु पर आधारित है....रहा होता....या मंचन के 20 साल पूरे कर लेने के बाद है।''

आज के समय में नौटंकी

साहित्य से सम्बन्ध रखने वाली, लेकिन धीरे-धीरे गायब हो रही विभिन्न प्रदर्शनकारी कलाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू किए कार्यक्रमों की शृंखला में हिन्दी एवं मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली ने हाथरस शैली की नौटंकी का मंचन त्रिवेणी सभागार में किया। शिकोहाबाद उत्तर प्रदेश से आई श्रीमती कृष्णा माथुर और उनके साथियों ने 'इंदल हरण' नौटंकी की प्रस्तुति दी।

डॉ० महेशचन्द्र शर्मा की कृतियों का विमोचन

प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार आचार्य डॉ० महेशचन्द्र शर्मा के छठवें शोधपूर्ण ग्रन्थ 'धर्म और राजनीति' का लोकार्पण छत्तीसगढ़ के मुख्यमन्त्री डॉ० रमन सिंह द्वारा किया गया।

एक दूसरे कार्यक्रम में डॉ० शर्मा की रचना 'छत्तीसगढ़ में संस्कृत' का प्रदेश के संस्कृति एवं शिक्षामंत्री श्रीबृजमोहन अग्रवाल ने विमोचन किया।

4-5-6 तिरुमुरै—हिन्दी रूपान्तर ग्रन्थ का लोकार्पण

डॉ० एन० सुन्दरम द्वारा विरचित 4-5-6 तिरुमुरै अप्पर तेवारम हिन्दी रूपान्तर ग्रन्थ का विमोचन मद्रास विश्वविद्यालय के मरीना कैम्पस में सम्पन्न हुआ। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन पटना खुला विश्वविद्यालय के द्वारा हुआ है। प्रसिद्ध उद्योगपति व गाँधीवादी डॉ० एन० महालिंगम ने इस ग्रन्थ का लोकार्पण किया। प्रसिद्ध गाँधीवादी व समाजसेवक श्री एन० शोभाकान्तदास ने ग्रन्थ की प्रथम प्रति प्राप्त की। तंजाऊर तमिल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० औव्वै नटराजन ने इस ग्रन्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि हिन्दी माध्यम से तमिल प्राचीन भक्ति साहित्य का प्रचार-प्रसार

होना चाहिए। तभी भारतीय भक्ति साहित्य के बारे में हमें विस्तृत जानकारी मिल सकती है।

अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी

भीलवाड़ा में 'बालवाटिका' की ओर से आयोजित अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी व सम्मान समारोह 5-6 सितम्बर 2009 को सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि श्री लक्ष्मीनारायण डाड ने कहा कि बालसाहित्यकार बालमन में प्रवेश कर बालसाहित्य की रचना करेंगे, तभी वे बालसाहित्य की कसौटी पर खरे उतर पायेंगे।

इस सत्र में विनायक विद्यापीठ संस्थान की ओर से पहला राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान 'ज्ञान अर्पितम् अवार्ड-2009' राजस्थान के सुपरिचित शिक्षाविद् व पूर्व विधायक श्री शिवकिशोर सनाढ्य को मंचस्थ अतिथियों द्वारा समर्पित किया गया। सम्मान स्वरूप श्री सनाढ्य को ग्यारह हजार रुपये नकद, श्रीफल, श्रीनाथजी की रजत प्रतिमा और साहित्य आदि भेंट कर तथा मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ० भैरूँलाल गर्ग ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि इस संगोष्ठी व सम्मान समारोह में देश के 13 प्रदेशों के बालसाहित्यकार सहभागी बने हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी

बिलासपुर में त्रिदिवसीय साहित्यिक अनुष्ठान विकास संस्कृति महोत्सव के आयोजकत्व एवं छत्तीसगढ़ शासन संस्कृति विभाग के प्रायोजकत्व में प्रवर्तित 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं समकालीन विमर्श' विषयक राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी का आयोजन 6 से 8 नवम्बर तक स्थानीय राघवेन्द्र राव सभा भवन में सम्पन्न हुआ। तीन दिनों तक चलने वाले इस आयोजन में छह राज्यों सहित छत्तीसगढ़ प्रदेश के शताधिक साहित्यकार, प्राध्यापक व शोध से जुड़े विद्वान सम्मिलित हुए।

22वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 140वीं जयन्ती तथा भारतीय स्वतन्त्रता की 62वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, रूपाम्बरा, कोलकाता द्वारा कोदाई केनाल में दिनांक 2-4 अक्टूबर 2009 को दि कार्लटन के सभा कक्ष में 22वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, राजभाषा प्रदर्शनी, विशेष हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया, जिसमें भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों, राज्यों के वरिष्ठ कार्यपालक, हिन्दी अधिकारी, हिन्दी स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं कई भारतीय भाषाओं के विद्वान, लेखक उपस्थित थे। सम्मेलन का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल छत्तीसगढ़ श्री ई०एस०एल० नरसिम्हन ने महात्मा गाँधी के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं पंच प्रदीप जलाकर किया। इस अवसर पर रूपाम्बरा का 20वाँ भाषा-साहित्य विशेषांक स्मारिका का विमोचन किया गया तथा कई अन्य संस्थानों द्वारा प्रकाशित साहित्य का विमोचन भी हुआ। राजभाषा हिन्दी की उल्लेखनीय प्रगति हेतु भारत सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों, निगमों एवं उपक्रमों को सहस्राब्दि राष्ट्रीय राजभाषा शील्ड सम्मान तथा इन संस्थानों द्वारा प्रकाशित की जा रही राजभाषा पत्रिकाओं के बेहतर गेटअप, सामग्री, ज्ञान संवर्धित प्रचारात्मक लेख स्वस्थ्य एवं पठनीय सामग्री के लिए राजभाषा पत्रिका शील्ड सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया। विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान—श्री वाई लक्ष्मी प्रसाद, अध्यक्ष-आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी, डॉ० वी०वी० विश्वम्, सम्पादक-संग्रंथन एवं राम संजीवय्या अध्यक्ष-मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद को प्रदान किया गया। तमिल तथा हिन्दी के विद्वान, अनुवादक श्री आर शौरिराजन को महाकवि सुब्रमण्यम् भारती राष्ट्रीय साहित्य सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया।

'भारत का सामाजिक यथार्थ बदल रहा है'

भारत का सामाजिक यथार्थ अत्यन्त जटिल, विविध, बहुस्तरीय और रूढ़िबद्ध है। वह बदल रहा है, लेकिन इतनी तेजी से नहीं कि यहाँ की सामाजिक चेतना को बदल दे। इससे पहले और तेजी से बाजारवाद और उपभोक्ता संस्कृति जैसी शक्तियाँ सामाजिक चेतना को बदल रही हैं।

यह कहना है ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक कुँवर नारायण का। वे विगत दिनों पटना में साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' द्वारा आयोजित उसके संस्थापक सम्पादक उदयराज सिंह की स्मृति को समर्पित पाँचवाँ स्मारक व्याख्यान कर रहे थे। व्याख्यान का विषय था 'साहित्य और आज का समाज।'

समारोह की अध्यक्षता सुप्रतिष्ठ आलोचक डॉ० खगेन्द्र ठाकुर ने की, जबकि संचालन 'नई धारा' के सम्पादक एवं कवि-आलोचक डॉ० शिवनारायण ने किया।

इस अवसर पर उदयराज सिंह की धर्मपत्नी एवं 'नई धारा' की संचालिका श्रीमती शीला सिन्हा ने श्री कुँवर नारायण को उदयराज सिंह स्मृति सम्मान से विभूषित किया, जिसके तहत उन्हें एक लाख रुपए की राशि सहित शॉल, सम्मान पत्र, प्रतीक चिह्न एवं श्रीफल अर्पित किया। इसके बाद 'नई धारा' के प्रधान सम्पादक प्रमथराज सिंह ने डॉ० बालेन्दुशेखर तिवारी (राँची) एवं राधेश्याम तिवारी (दिल्ली) को 'नई धारा रचना सम्मान' से विभूषित किया, जिसके तहत उन्हें 25-25 हजार रुपये की राशि सहित प्रतीक चिह्न, सम्मान पत्र, शॉल एवं श्रीफल अर्पित किया गया।

'उनके जवाब' का लोकार्पण

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने 'संकल्य' (त्रैमासिक) पत्रिका के सम्पादक डॉ० गोरखनाथ तिवारी की पुस्तक 'उनके जवाब' का लोकार्पण हिन्दी अकादमी, हैदराबाद के तत्त्वावधान में उस्मानिया विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में किया।

कौमुदी महोत्सव सम्पन्न

भारत शासन मानव संसाधन विकास मंत्रालयाधीन राष्ट्रिय-संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा प्यारेलाल भवन, बहादुरशाहजफर मार्ग, नई दिल्ली में 'कौमुदी महोत्सव 2009' समायोजित किया गया। इस महोत्सव का उद्घाटन श्रीमती शीला दीक्षित, माननीय मुख्यमंत्री के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। आचार्य पंकज चान्दे, कुलपति, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक्, सारस्वतातिथि और आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी कुलपति राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान, नई दिल्ली इस महोत्सव में अध्यक्ष थे।

कौमुदी महोत्सव में नाट्यस्पर्धा की मूल संकल्पना पूर्ण करने के लिए इस वर्ष महाकवि कालिदास का 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्', आद्यनाटककार भास का 'प्रतिमा नाटक', आधुनिक नाटककार प्रो० राजेन्द्र मिश्र का 'इन्द्रजालम्' एवं महेन्द्र वर्मन की रचना 'मत्त विलासम्' की सरस प्रस्तुतियाँ संस्कृत-संस्थान के विभिन्न परिसरों से आये छात्र, छात्राओं ने की।

'हिन्द स्वराज : 21वीं सदी में पुनर्पाठ' पर त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्द स्वराज के सौ वर्ष पूरे होने पर इसकी प्रासंगिकता को लेकर देश-दुनिया में विमर्श का आयोजन हो रहा है। इस दिशा में महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा व भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के 'शोध समवाय' की ओर से 'हिन्द स्वराज : 21वीं सदी में पुनर्पाठ' विषय पर त्रिदिवसीय (12-14 नवम्बर, 2009) अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति विभूतिनारायण राय ने की।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रो० सलिल मिश्रा ने कहा कि महात्मा गाँधी का जीवन एक कार्यशील व्यक्ति का जीवन था। जीवन के हर पड़ाव पर वे सक्रिय दिखाई देते हैं। गाँधीजी के जीवन में राजकोट सत्याग्रह, बारदोली आन्दोलन, चम्पारण, खेड़ा का आन्दोलन, रौलट सत्याग्रह, असहयोग तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह, मन्दिर खुलवाने के लिए किया गया आन्दोलन जैसे कई *माइलस्टोन* हैं, जिनमें 'हिन्द स्वराज' भी एक है। प्रो० रमेश दीक्षित

ने गाँधीजी को राजनीतिककर्त्ता, संगठनकर्त्ता, रणनीतिकार, आन्दोलनकारी के रूप में महामानव बताते हुए कड़े तेवर में कहा कि 'हिन्द स्वराज' लिखते समय गाँधीजी भारतीय समाज को बहुत अधिक नहीं जान पाए थे क्योंकि उन्होंने आम आदमी का उल्लेख बखूबी ढंग से नहीं किया है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने 1909 ई० में लिखे हिन्द स्वराज का पुनर्पाठ किए जाने की जरूरत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी भाषा में परिवर्तन हो जाय, मूल में परिवर्तन न किया जाय। मॉरीशस के आर० द्वारिका ने 'हिन्द स्वराज' के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह एक कालजयी कृति है।

विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो० नदीम हसनैन ने देश के विभिन्न प्रदेशों से आए विद्वानों का स्वागत करते हुए कहा कि 'हिन्द स्वराज' के सौ वर्ष पूर्ण होने के बावजूद इसकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है। त्रिदिवसीय संगोष्ठी में प्रो० विजयबहादुर सिंह, डॉ० राजकुमार, डॉ० दीपक मलिक, डॉ० अरुणेश नीरन एवं अन्य विद्वानों ने 'हिन्द स्वराज' के पुनर्पाठ का विश्लेषण किया।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग तथा महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में मानविकी एवं समाज विज्ञान विषयों के अन्तर्गत तकनीकी शब्दावली का अनुप्रयोग एवं सम्भावनाएँ' विषय पर विश्वविद्यालय परिसर में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति सुप्रसिद्ध मानवशास्त्री प्रो० नदीम हसनैन ने की।

प्रमुख अतिथि साहित्यकार से०रा० यात्री ने आंचालिक भाषाओं से भी हिन्दी का विस्तार करने पर बल देते हुए कहा कि हमें शिक्षाशास्त्रियों को उन अंचलों से लाने की जरूरत है, जो आंचालिक भाषा की क्षमता को पहचानते हैं। हमें खोज पड़ताल करनी चाहिए कि जो शब्द हिन्दी में नहीं है, अगर वह प्रांतीय बोली व भाषाओं में है तो उसे हिन्दी भाषा में लाएँ। भारतीय भाषाओं के समन्वय से होगा देश का विकास।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रतिकुलपति प्रो० हसनैन ने कहा कि हिन्दी भाषा का विकास करते समय हमें इण्डिया और भारत के साथ-साथ हिन्दुस्तनवाँ अर्थात् आदिवासी, दलित एवं स्त्रियों के विकास के बारे में सोचना पड़ेगा।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा जो शब्द बनए जाते हैं वे किसी खास वर्ग के लिए ही नहीं हों अपितु सर्वसाधारण के हित को ध्यान में रखते हुए शब्द बनाए जाएँ।

पुस्तक प्रदर्शनी : संगोष्ठी के दौरान वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों की पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

भारतीय क्रिकेट कप्तान 'धोनी' की जीवनी का लोकार्पण

23 अक्टूबर को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तानों श्री बिशन सिंह बेदी तथा श्री अजय जडेजा ने वर्तमान भारतीय कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी पर खेल-पत्रकार श्री सी० राजशेखर राव द्वारा लिखित जीवनी 'धोनी' का लोकार्पण किया। ओशियन बुक्स द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक लेखक ने भारतीय क्रिकेट के रॉक स्टार धोनी के गृहनगर राँची जाकर उनके परिजनों, मित्रों और साथी खिलाड़ियों से बातचीत के आधार पर लिखी है।

'कंट्रोल एड्स थ्रू होम्योपैथी' लोकार्पित

11 नवम्बर को पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम ने प्रसिद्ध होम्योपैथी चिकित्सक डॉ० आर०के० कपूर की पुस्तक 'कंट्रोल एड्स थ्रू होम्योपैथी' का लोकार्पण किया। ओशियन बुक्स द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक एड्स जैसी बीमारी का होम्योपैथी चिकित्सा द्वारा उपचार करने का सरल मार्ग बताती है। डॉ० कपूर को अनेक असाध्य, जटिल रोगों से पीड़ित मरीजों को ठीक करने का लम्बा अनुभव है।

'शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ' कृति लोकार्पित

15 नवम्बर को प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध शहनाई वादक भारत रत्न बिस्मिल्लाह खाँ के जीवन पर मुरली मनोहर श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक 'शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ' का लोकार्पण बिहार के मुख्यमन्त्री माननीय श्री नीतीश कुमार के कर कमलों से 'संवाद', मुख्यमन्त्री सचिवालय, पटना में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता-निर्देशक श्री प्रकाश झा ने की। विशिष्ट अतिथि सांसद श्री जगदानन्द सिंह एवं 'प्रभात खबर' के मुख्य सम्पादक श्री हरिवंश थे।

'वीरेंद्र नारायण ग्रन्थावली' का लोकार्पण

16 नवम्बर को पाँच खण्डों में प्रकाशित 'वीरेंद्र नारायण ग्रन्थावली' का लोकार्पण दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में वरिष्ठ कवि श्री अशोक वाजपेयी ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री अशोक वाजपेयी, ग्रन्थावली के सम्पादक मंगलमूर्ति ने अपने विचार रखे।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह

24-25 अक्टूबर को गाजियाबाद के स्थानीय हिन्दी भवन में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा विकास संगठन तथा यू०एस०एम० पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में '17वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह' और '10वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का आयोजन सम्पन्न हुआ। दो दिवसीय समारोह में 'भाषा संस्कारों की जननी है' विषय पर तीन सत्रों में देश के विभिन्न भागों से आए विद्वानों ने अपने आलेख/विचार प्रस्तुत किए।

इस वर्ष तीन विभूतियों को 'शिखर सम्मान 2009' से सम्मानित किया गया। प्रख्यात वरिष्ठ गीतकार श्री कपिल कुमार को 'कविकुल शिरोमणि सम्मान', श्री मोहन स्वरूप भाटिया को 'ब्रज शिरोमणि सम्मान', बहुविधा रचनाकार श्री के०एल० दिवान को 'कलमकार शिरोमणि सम्मान' तथा डॉ० रामनिवास अग्रवाल को 'समाज-रत्न सम्मान' से अलंकृत किया गया। इनके अतिरिक्त अनेकानेक विद्वानों को विभिन्न सम्मानों से अलंकृत किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

28 अक्टूबर को दिल्ली में भाषा संस्थान एवं भारतीय साहित्य सम्बन्ध परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में 'हिन्दी में बोलियों का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता ज्ञानपीठ तथा बिड़ला अकादमी के निदेशक सलाहकार रहे श्री विशन टंडन द्वारा की गई। अन्य साहित्यकारों में सर्वश्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, सूर्यप्रसाद दीक्षित, कृष्णदत्त पालीवाल, कैलाश बाजपेयी, शेरजंग गर्ग तथा विमलेश कांति वर्मा ने अपने विचार प्रकट किए।

कथासमुच्चय शृंखला सम्पन्न

4 नवम्बर को हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित 'कथासमुच्चय' शृंखला के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के तीन सुपरिचित कथाकार सर्वश्री चन्द्रकांता, संजीव और बलराम का कहानी पाठ हुआ। अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ० अशोक चक्रधर के सान्निध्य में त्रिवेणी सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० विजयमोहन सिंह ने श्री बलराम के कहानी संग्रह 'गोआ में तुम' का विमोचन किया।

बाल साहित्य पर संगोष्ठी आयोजित

10 नवम्बर को बच्चों की पत्रिका 'बाल प्रहरी' की ओर से नई दिल्ली के गढ़वाल भवन में आयोजित एक संगोष्ठी में साहित्यकारों, पत्रकारों, शिक्षाविदों और विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े बुद्धिजीवियों ने विचार व्यक्त किए। 'बाल साहित्य की दशा व दिशा' विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी की अध्यक्षता जाने-माने साहित्यकार श्री द्रोणवीर कोहली ने की तथा संचालन 'बाल प्रहरी' पत्रिका के सम्पादक श्री उदय किरौला ने किया।

पुस्तक परिचय

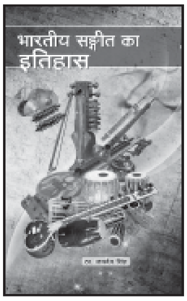

भारतीय संगीत का इतिहास

लेखक

स्व० डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह

सम्पादिका : **प्रेमलता शर्मा**

द्वितीय संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 436

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-723-3

अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-724-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

किसी भी संगीत का इतिहास अन्य कलाओं या विद्याओं के इतिहास की अपेक्षा कहीं अधिक अगम्य होता है। इसका कारण यही है कि संगीत अपने कोई भी प्रत्यक्ष अवशेष काल के वक्ष पर नहीं छोड़ जाता। संगीत का वर्णन, उसके लक्षण का विचार-विमर्श या उसके प्रयोग के सन्दर्भ—ये सब उपलब्ध हो सकते हैं, किन्तु स्वयं संगीत का श्रव्य रूप तो क्षणजीवी ही होता है। उसे पुन: प्रस्तुत (reproduce) करने के लिए सुरक्षित रखने के यान्त्रिक उपकरण आज से प्राय: सौ वर्ष से कुछ अधिक पूर्व ही उपलब्ध होने लगे हैं। मूर्त्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य, साहित्य आदि की स्थिति ऐसी नहीं है, क्योंकि इनका प्रत्यक्ष रूप सुरक्षित रहता है। नृत्य को भी चित्र और मूर्त्ति के माध्यम से आंशिक रूप से अंकित किया जा सकता है। किन्तु गेय का अंकन उस कोटि का नहीं होता क्योंकि वह श्रव्य का प्रत्यक्ष रूप सुरक्षित नहीं रख सकता।

भारतीय संगीत में इतिहास के अध्ययन की स्थिति और भी बीहड़ है, क्योंकि उसका बहुत कम अंश स्वरलिपि में अंकित है और उसमें अनेकानेक धाराओं का मिश्रण दीर्घकाल से होता रहा है। इसलिए चाहे-अनचाहे ऐतिहासिक अध्ययन का मुख्य आधार 'लक्षण'-ग्रन्थ ही बन जाते हैं। भूतकाल के 'लक्ष्य' से सीधा सम्पर्क असम्भव ही होता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में वैदिक संगीत का वर्णन 131 पृष्ठों में हुआ है, जो कि पूरे ग्रन्थ का एक तृतीयांश है। यह वर्णन अनेक लक्षणगत प्रमाणों के साथ-साथ आज प्रचलित वैदिक पाठ-पद्धति और गान-पद्धति को लेते हुए प्रस्तुत किया गया है। वैदिक धारा में पाठ और गान का स्वरूप बहुत-कुछ अक्षुण्ण रह पाया है, इसलिये उस प्रसंग में लक्षण और लक्ष्य को साथ-साथ ले कर चलना सम्भव है। लेखक ने इस सुविधा का भरपूर उपयोग किया है और सामगान को आधुनिक स्वरलिपि में उदाहरण के तौर पर रखा है।

वैदिकेतर अर्थात् लौकिक संगीत की स्थिति भिन्न है, क्योंकि उसमें लक्षण तो किसी सीमा तक सुरक्षित रह पाया है, किन्तु लक्ष्य मौखिक परम्परा में से होता हुआ अनेक परिवर्तनों का भाजन बना है। इन परिवर्तनों का लेखा-जोखा करना और उस के साथ सातत्य (continuity) की धारा का आकलन अत्यन्त कठिन कार्य है, जो किसी एक अध्ययन में सम्पन्न नहीं हो सकता।

प्रस्तुत ग्रन्थ में वैदिक धारा के निरूपण के पश्चात् रामायण, महाभारत, हरिवंश, पुराण, पाणिनीय अष्टाध्यायी, बौद्ध वाङ्मय एवं जैन वाङ्मय में प्राप्त संगीत-सम्बन्धी उल्लेखों का मूल्यवान् संकलन है। ये सब ऐतिहासिक अध्ययन के आधार हैं। बौद्ध धारा के प्रसंग में भरहुत, साँची और नागार्जुनकोंडा में उकेरे हुए वाद्य और नृत्य के दृश्यों पर भी विस्तार किया गया है। पुरातात्त्विक अवशेषों पर कुछ विचार द्वितीय अध्याय में सिन्धु घाटी-सभ्यता के प्रसंग में भी किया गया है। सिन्धु-सभ्यता प्राग्वैदिक थी या वैदिक? इस प्रश्न को लेखक ने उठाया तो है किन्तु कोई निर्णय नहीं लिया है। जैन वाङ्मय पर विचार के बाद संगीतशास्त्र की कुछ प्राचीन विभूतियों पर एक छोटा अध्याय है, इसमें अधिकांश पौराणिक नामों का संग्रह है। उसके बाद का अध्याय नाट्यशास्त्र के पूर्वकाल पर कुछ विचार प्रस्तुत करता है। उपान्त्य अध्याय में नाट्यशास्त्र के स्वरूप पर विचार है तथा संस्करणों एवं टीकाकारों का विवरण है। अन्तिम अष्टादश अध्याय में, नाट्यशास्त्र में प्राप्त संगीत-विचार का आकलन है। यह उल्लेखनीय है कि नाट्यशास्त्र के केवल अट्ठाइसवें अध्याय पर ही यहाँ विचार हो पाया है, जिसमें कि स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, तान, साधारण और जाति का समावेश है। जातियों के विनियोग, वर्ण, अलंकार, वीणा के वादन-प्रकार, ताल, ध्रुवाएँ, अवनद्ध वाद्य—इतने विषय नाट्यशास्त्र के उन्तीसवें से लेकर चौंतीसवें अध्याय तक वर्णित हैं, इन पर कोई विचार नहीं हो पाया है। ऐसा लगता है कि लेखक इस ग्रन्थ को पूर्ण नहीं कर पाये हैं, और नाट्यशास्त्र के अट्ठाइसवें अध्याय का विवरण दे कर ग्रन्थ का विराम हो गया है। इसलिए परिवर्तन के आकलन का प्रसंग ही उपस्थित नहीं हो पाया है। कुल मिला कर प्राचीन काल के वाङ्मय में प्राप्त संगीत-सम्बन्धी उल्लेखों का उत्तम संकलन यहाँ प्राप्त होता है। निष्कर्षों का कार्य भावी अध्येताओं का दायित्व है।

'वैदिक काल' 'इतिहास काल' जैसी संज्ञाओं से काल की सीधी रेखा की अवधारणा ध्वनित होती है। यह अवधारणा पश्चिम की देन है, जो कि हम लोगों के चित्त में गहरी पैठ गई है। वास्तव में इस देश में अधिकांश घटनाक्रम को सीधी रेखा में रख कर देखना सम्भव नहीं है। बहुत-कुछ एक साथ घटित होता रहा है (concurrence) और बहुत-कुछ में एकाधिक घटनाओं की परस्पर व्याप्ति (overlapping) मिलती है। अस्तु।

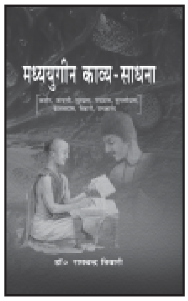

मध्ययुगीन काव्य-साधना

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

तृतीय संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 300

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-691-5

अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-692-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत कृति में हिन्दी-साहित्य के पूर्व-मध्यकाल (संवत् 1375-1700) की सीमा में आने वाले छ: कवियों—कबीर, जायसी, सूरदास, नन्ददास, तुलसीदास और केशवदास—और उत्तर-मध्यकाल (संवत् 1700-1900) की सीमा में आने वाले दो कवियों—बिहारी और घनआनंद का मूल्यांकन किया गया है। प्रारम्भ में पृष्ठभूमि के अन्तर्गत मध्ययुग के पूरे साहित्य को दृष्टि में रखते हुए तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना की समीक्षा की गई है। हिन्दी-साहित्य के इतिहास-लेखकों ने काव्य-प्रवृत्ति की प्रधानता को दृष्टि में रखकर पूर्व-मध्यकाल को भक्तिकाल और उत्तर-मध्यकाल को रीतिकाल की संज्ञा प्रदान की है। विचार करने पर यह विभाजन उपयुक्त नहीं प्रतीत होता। यदि रीति-काव्य का सम्बन्ध दरबारी संस्कृति से है तो स्वीकार करना होगा कि पूर्व-मध्यकाल में भी यह संस्कृति सशक्त थी और इसके प्रभाव में रचनाएँ लिखी जा रही थीं। इस प्रकार उत्तर-मध्यकाल में भी भक्ति का प्रवाह सूख नहीं गया था। इसलिए प्रस्तुत कृति में लेखक ने मध्यकालीन हिन्दी-काव्य को रचना की प्रेरणा-भूमियों को ध्यान में रखकर 'राज्याश्रयी', 'धर्माश्रयी' और 'लोकाश्रयी' शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया है।

प्रस्तुत कृति में लेखक ने काव्य-कृतियों के अनुशीलन के आधार पर उनमें प्रतिबिम्बित ऐसे जीवन-मूल्यों को प्रत्यक्ष करने की चेष्टा की है जिनसे चिपकी रहकर मध्ययुगीन जनता अपना अस्तित्व सुरक्षित रखने में सफल हुई थी। कवियों का व्यक्तिगत मूल्यांकन करते समय लेखक ने आधुनिक समीक्षा-सिद्धान्तों के साथ ही उन आदर्शों को भी दृष्टि में रखा है जो तत्कालीन कवियों को निजी तौर पर मान्य थे। लेखक ने यथासंभव अपने मूल्यांकन को सन्तुलित, निष्पक्ष, विवेक-सम्मत बनाये रखने की कोशिश की है।

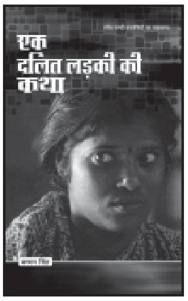

एक दलित लड़की की कथा

बच्चन सिंह

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 172

सजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-643-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बच्चन सिंह की लम्बी कहानियों का तीसरा संकलन है—एक दलित लड़की की कथा। इस संकलन में पाँच कहानियाँ हैं। *लक्खी काकी की आत्मकथा*, जानकी, *अंधेरे में पाँव, एक दलित लड़की की कथा* और *बदला*। सभी कहानियों में दलित समाज किसी न किसी रूप में उपस्थित है लेकिन बदले हुए परिवेश और व्यक्तित्व के साथ। लक्खी काकी की आत्मकथा में लक्खी बचपन से लेकर बुढ़ापे तक फैली हुई है लेकिन वैधव्य उसका पीछा नहीं छोड़ता। जब उसकी शादी एक अधेड़ व्यक्ति से हुई तब वह शादी का मतलब भी नहीं जानती थी। यह सवाल उसे जरूर कचोटता रहता है कि गाँव में जिस तरह धूम-धड़ाके से अन्य लड़कियों की शादियाँ हुईं, वैसे उसकी शादी क्यों नहीं हुई? जब वह ससुराल गई तब भी शादी का अर्थ नहीं समझ पाई क्योंकि उसका पति इस लायक रह ही नहीं गया था। तो क्या लक्खी अपने बेमेल विवाह का दंश जीवन भर झेलने के लिए अभिशप्त है? कुछ ही महीने बाद उसके पति की मृत्यु हो जाती है और उसे अपनी जिन्दगी का अर्थ अपने देवर की मजबूत बाहों में दिखाई देता है। शादीशुदा देवर अपनी पत्नी को छोड़ देता है और वह शादी रचा लेती है और उसका जीवन गुलाब की तरह खिल उठता है। एक बच्चे की माँ बन जाती है लेकिन यह क्या? यह कैसा तुषारापात? क्या नियति को लक्खी की-खुशी स्वीकार नहीं है? अपने दूसरे पति की दुर्घटना में मृत्यु के बाद लक्खी बुरी तरह टूट जाती है और पति की दी हुई चिन्हाटी के साथ पूरा जीवन वैधव्य को होम कर देने का संकल्प लेती है। तीसरे व्यक्ति के साथ बैठने का विचार ही उसे भीतर तक थरथरा देता है। जीवन का हर लम्हा उसे बुढ़ापे की ओर ढकेलता जाता है और लक्खी अपने मायके में सारा जीवन भीतर के ताप में राख कर देती है। लेखक ने एक नारी के दर्द और रोमांस को सफलतापूर्वक उभारा है। कहानी का शिल्प शुरू से अंत तक पाठक को बाँधे रखता है।

लक्खी के दूसरे छोर पर है जानकी जो अपने समाज की तमाम विसंगतियों से जूझते उन्हें खण्ड-खण्ड करते आगे बढ़ती है और बी०ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती है। जानकी एक ओजस्वी वक्ता है। अपने कालेज में छात्रसंघ की अध्यक्ष रह चुकी है। उसके गाँव का एक युवा नेता उसमें छिपी राजनीति की असीम संभावनाएँ देखता है और अपनी नवगठित पार्टी में उच्च ओहदा देने का भरोसा दिला कर जानकी की राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ जगाता है। जानकी राजनीति को सामाजिक परिवर्तन का अच्छा माध्यम मानती है। वह मानती है कि राजनीतिक ताकत को हथियार बनाकर वह असामाजिक और आपराधिक तत्त्वों को परास्त कर सकती है। वह नेता की पार्टी में शामिल हो जाती है और थोड़े ही दिनों में लोकप्रिय हो जाती है। वह राजनीतिक जीवन की शुरुआत गाँव के ही दबंग और अपराधी व्यक्ति के खिलाफ मोर्चा खोलकर करती है जो सारा राशन चोर बाजारी में बेच देता है। नेता का मत है कि पहले पार्टी को मजबूत करो, सत्ता हासिल करो, फिर सत्ता की ताकत के सहारे असामाजिक तत्त्वों का सफाया करो। लेकिन जानकी इतनी लम्बा रास्ता तय करने का इंतजार करने के पक्ष में नहीं है और वह गाँव तथा क्षेत्र के कोटेदारों के खिलाफ जंग छेड़ देती है जिनमें गाँव का कोटेदार भी होता है। लेकिन जानकी भूल जाती है कि वह एक निहत्थी स्त्री है। एक दिन जब वह पार्टी की मीटिंग में भाग लेने शहर जा रही होती है, तभी अगवा कर ली जाती है। फिर उसका कुछ पता नहीं चलता।

संकलन की अन्य कहानियाँ भी अपने-अपने ढंग से सामाजिक विद्रूपताओं पर प्रहार करती हैं। इस तरह यह संकलन पठनीय हो गया है और पाठकों को तमाम सामाजिक सन्दर्भों से रूबरू कराता है।

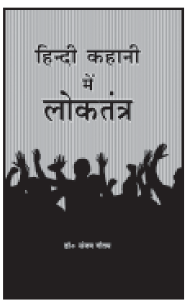

हिन्दी कहानी में लोकतंत्र

डॉ० संजय गौतम

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 192

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-636-6
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

शासन प्रणाली के रूप में लोकतंत्र मानव सभ्यता का अब तक का सर्वोत्तम स्वप्न है। सभ्यता की विकास यात्रा में बीसवीं शताब्दी हलचल भरी रही है। तानाशाही राजशाही से लेकर साम्यवाद एवं समाजवाद जैसी अनेक प्रणालियों का अवसान इसी शताब्दी में हुआ लेकिन अनेक किन्तु परन्तु के बावजूद लोकतंत्र के प्रति आकर्षण अभी भी बना हुआ है तो शायद इसीलिए कि यह प्रणाली स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व का आश्वासन देती है, अब यह अलग बात है कि यह आश्वासन पूरा होता है या नहीं।

सही मायने में देखें तो इस पुस्तक के मूल में यही है। पुस्तक के लेखक संजय गौतम ने माना है कि लोकतंत्र के मूल्य स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व प्रकारांतर से साहित्य के बुनियादी मूल्य हैं। ये वही मूल्य हैं जिसका स्वप्न आदिमकाल से हर रचनाकार देखता रहा है आदि कवि बाल्मीकि से लेकर अब तक। साहित्य समाज का यह बुनियादी स्वप्न हिन्दी कहानी में किस तरह रूपांतरित हुआ है, बीसवीं शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण विधा कहानी में इस स्वप्न के टूटने की ध्वनि किस तरह गूँजती है, लोकतंत्र एक प्रणाली के रूप में कैसा विद्रूप चेहरा धारण करता है, इस पुस्तक में इन सवालों का तरतीबवार विश्लेषण है।

लोकतंत्र और लोकतांत्रिक चेतना का विश्लेषण करते हुए लेखक केवल पश्चिम के प्रचलित लोकतंत्र की ओर नहीं देखता अपितु भारतीय परम्परा में जनतांत्रिक चेतना की खोज करता है और यह बताता है कि भारतीय गणतंत्रों से आज तक भारतीय सभ्यता में जनतंत्र की चेतना प्रवाहित है। वह यह भी बताता है कि लोकतंत्र की भारतीय परम्परा अधिक मूल्य संपृक्त एवं समरस समाज बनाने में कारगर है लेकिन आधुनिक समाज ने उसे भुला दिया है। आधुनिक समाज-व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन के लिए कैसे यह परम्परा मूल्यवान साबित हो सकती है इसका उत्तर देने का सार्थक एवं सबल प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

हिन्दी कहानी में लोकतंत्र के अभिव्यक्त स्वरूप की तलाश करते हुए लेखक हिन्दी की प्रथम कहानी तक जाता है और टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे) की कहानी में भी व्यक्त लोकतांत्रिक चेतना का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसके बाद तो कहानी का हर काल वह इसी उद्देश्य से खंगालता है और लोकतंत्र के हर ज्वलंत प्रश्न से टकराते हुए समकालीन कहानी तक की यात्रा करता है जब कहानी और समाज दोनों ही भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, पारिवारिक तनाव, अवसाद जैसी चुनौतियों से दो चार हो रहे हैं।

पुस्तक को पढ़ने के बाद लोकतंत्र के सच्चे अर्थ का तो विस्तार होता ही है, जीवन के प्रति भी हमारी समझ गहरी होती है। सामाजिक जीवन में और व्यक्तिगत जीवन में कैसे हम लोकतांत्रिक मूल्यों को आत्मसात कर सुन्दर समाज का सृजन कर सकते हैं, यह प्रश्न कहीं न कहीं इस किताब के मूल में है। इसीलिए यह पुस्तक कहानी के विश्लेषण के साथ-साथ हमारे जीवन का भी विश्लेषण करने वाली किताब बन गई है। अपने आप में अनूठी इस पुस्तक को पढ़ना एक रोचक विश्लेषणात्मक आख्यान से गुजरना है। यह पुस्तक शोधार्थियों विद्वानों के साथ-साथ अपने समाज, लोकतंत्र और जीवन मूल्यों को समझने के प्रयास में लगे हर स्वप्नजीवी को भी आमंत्रित करती है।

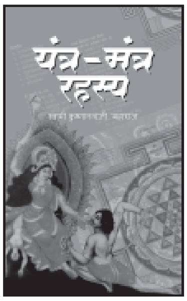

यंत्र-मंत्र रहस्य

स्वामी कृष्णानंदजी महाराज

द्वितीय संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 208

अजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-718-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सम्पूर्ण तंत्र-मंत्र के रहस्य का चिन्तन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त वस्तु की रक्षा करना ही इस पथ/मार्ग का मुख्य उद्देश्य है। इसी को गीता में योगक्षेम कहा गया है। 'योगक्षेम' को 'शंयु: पुष्टि:' शान्ति पदों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। तंत्र-मंत्र रहस्य में जो 'यातु' कृत्या और अभिचार कर्मों का प्रतिपादन किया गया है उसे लेकर कुछ विद्वानों ने सद्मार्ग के विरुद्ध बवंडर खड़ा कर दिया है। हम किसी की निन्दा, आलोचना करने की प्रवृत्ति न रखकर इतना ही कहना चाहते हैं कि चारों वेदों का अध्ययन, सम्पूर्ण कर्म-काण्ड एवं तंत्र-मंत्र का अध्ययन, मनन, स्वाध्याय और चिन्तन तप: साध्य साधना साध्य है।

'तंत्र-मंत्र' रहस्य विद्या, तत्त्वज्ञान और जन-कल्याणकारी कर्मों का रहस्य है। इसमें कृत्यादूषण एवं अभिचार कर्म तंत्र-मंत्र एवं यंत्र साधना बताए गए हैं, उनका उद्देश्य आत्मरक्षार्थ है। अत: वे भी शान्ति, पुष्टि के अन्तर्गत परिगणित हैं। अशुभ फलों के निवारण के लिए 'शम' कल्याण के लिए किए जाते हैं। उनके मूल में 'शान्ति' ही है। इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य शत्रुओं, दुष्टों, का शमन करना होता है जिससे व्यक्ति का, जन-समुदाय का अशुभ न हो, उसे कोई हानि न हो।

चारों वेदों कर्मकाण्डों एवं तंत्रशास्त्र का रहस्यमयी शक्ति का अस्तित्व अनादि काल से (लोग) मानव स्वीकार करते हैं। इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य किसी अभीष्ट की प्राप्ति के लिए उस रहस्यमयी आदिशक्ति की स्तुति की जाती है, यज्ञ किए जाते हैं, देवता भी उस आदिशक्ति की सहायता, कृपा के आकांक्षी होते हैं। ऋग्वेद संहिता में ऋषि विश्वामित्र अपने स्तुति सामर्थ्य से आदिशक्ति की प्रार्थना करते हुए कहते हैं— 'भारतान् जनान् रक्षा।'

अर्थात् भारतीय प्रजा की रक्षा करो। सम्पूर्ण वेद-वेदांग का अध्ययन करने से यह निश्चित प्रतीत होता है कि हमारे पुरातन महर्षि और पूर्वज अपने-अपने इष्ट देवता में अगाध श्रद्धा रखते थे। निष्ठापूर्वक उनकी आराधना किया करते थे। उनका यह दृढ़-विश्वास था कि देवाराधन देव-स्तुति से उनकी समस्त आध्यात्मिक, भौतिक कामनाएँ पूरी होती हैं। वैदिक-काल और उत्तर वैदिक काल में आध्यात्मिक और लौकिक सिद्धि प्राप्त करने के लिए मंत्र सिद्धि प्राप्त की जाती रही है। वह परम्परा अब भी प्रचलित है। तंत्र साधना द्वारा न केवल भौतिक सिद्धि प्राप्त की जाती है, अपितु उससे विमुक्ति भी प्राप्त होती है।

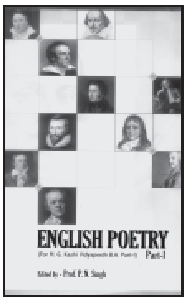

ENGLISH POETRY

Edited by

Prof. P.N. Singh

First Published : 2009

Page : 164

Paperback : Rs. 70.00 ISBN : 978-81-7124-718-9

Publisher : Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi

This book is primarily meant for the present-day Indian students offering English Literature at the undergraduate level. The task of the editor and annotator has always been difficult. Long ago Dr. Johnson pointed out his dilemma in the following words : "It is impossible for an expositor not to write too little for some, and too much for others." Some students and scholars always find it scanty, and others complain of copiousness. In preparing this book of English Poetry for the students I have borne in mind Dr. Johnson's dictum and have erred on the side of copiousness. In the present academic scenario where a very large number of ill equipped students are going in for English Literature, the annotator's task has been further complicated in Eastern U.P. in view of rural background of the students, their lack of vocabulary and knowledge of English language which is a pre-requisite for understanding literature. Teachers of English Literature have to take recourse to Hindi, even in teaching at Post-Graduate level. The annotators are bound to follow suit. Even text-book editors and annotators are bound to provide Hindi versions to facilitate the students comprehension of English words, summary of the poems etc. To cope with the keen competition of the Guides and some text-books which are no better than guides, I have taken the middle-path, keeping the use of Hindi to the minium possible. Inspite of the slenderness of the volume the book contains ample material to facilitate the proper comprehension of the poems and the salient feature of the poet's poetry.

We hope the students will find the book useful, and the teachers handy.

<u>Contents</u> : William Shakespeare, John Donne, John Milton, John Dryden, Alexander Pope, William Collins, William Blake, William Wordsworth, P.B. Shelley, John Keats.

आगामी प्रकाशन

संगीत सूक्ति संकलन

सम्पादक

अमित कुमार वर्मा

संगीत सम्बन्धी शास्त्र लेखन की परम्परा अति प्राचीन है। यह परम्परा सामवेद से आरम्भ होकर नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर आदि प्राचीन ग्रन्थों से होती हुई वर्तमान के उच्चस्तरीय शोध-ग्रन्थों के लेखन व प्रकाशन तक अबाध रूप से गतिशील है। संगीत के बहुमूल्य ज्ञान से परिपूर्ण इन प्राचीन व नवीन ग्रन्थों में संगीत मनीषियों के अनुभवजन्य ज्ञान के मोती हमें सूक्ति के रूप में प्राप्त होते हैं। सूक्तियों के सन्दर्भ में कहा गया है कि ज्ञानियों के ज्ञान व युगों के अनुभव सूक्तियों के माध्यम से संरक्षित रहते हैं। अत: इस पुस्तक में संगीत तथा संगीत सम्बन्धी विभिन्न बिन्दुओं पर शास्त्रकारों, साहित्यकारों, दार्शनिकों, कलाकारों व संगीत विद्वानों द्वारा व्यक्त किये गये श्रेष्ठतम् विचारों को सूक्ति के रूप में संकलित किया गया है। पुस्तक में संगीत, नाद, श्रुति, स्वर, राग, ध्रुपद, ख़याल, घराना, ताल, नृत्य, वाद्य आदि अनेक संगीत सम्बन्धी बिन्दुओं पर सूक्तियों का संकलन है। संगीत के प्राचीन व नवीन ग्रन्थों, पुस्तकों, लेखों आदि में उल्लिखित अधिक से अधिक मूल्यवान विचारों, परिभाषाओं व मतों का संकलन क्रमबद्ध रूप से किया गया है। भारतीय विद्वानों के साथ-साथ पाश्चात्य विद्वानों के संगीत सम्बन्धी विचारों को भी पुस्तक में स्थान दिया गया है। अध्ययन व शोध सम्बन्धी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक सूक्तियों के सन्दर्भ स्रोत, उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। साथ ही विभिन्न विश्वविद्यालयों के संगीत पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए पुस्तक की विषय-वस्तु का चयन किया गया है ताकि अधिकाधिक विद्यार्थी व शोधार्थी लाभान्वित हो सकें।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

आत्मतत्त्व से भरा अमृत कलश, भक्त चरण साहू, प्रकाशक : नमन प्रकाशन, मीरा रोड (पूर्व) मुंबई, प्रथम संस्करण, मूल्य : 200/- रु० मात्र

× × × दर्शन और अध्यात्म विषयक प्रचलित वैश्वक अवधारणाओं के बीच एक सांसारिक मनुष्य का आत्मचिंतन है प्रस्तुत ग्रन्थ। लेखक ने आज के सन्दर्भ में दार्शनिक / धार्मिक अवधारणाओं / पद्धतियों का परीक्षण / मूल्यांकन करते हुए जो तथ्य अथवा तत्त्व उपलब्ध किये हैं उनका संकलन है यह 'अमृत-कलश'।

लोक गंगा (पहाड़ अंक), सम्पादक : योगेश चन्द्र बहुगुणा, 'लोकगंगा मासिक', स्ट्रीट-6, सी-1, शास्त्रीनगर, हरिद्वार रोड, देहरादून, मूल्य : 50/-रु० मात्र

× × × इस बार 'पहाड़ अंक' के रूप में प्रस्तुत है प्रतिष्ठित पत्रिका 'लोक गंगा' मासिक का संयुक्तांक सितम्बर-नवम्बर 2009। प्रस्तुत अंक के सामग्री-संकलन और सम्पादन में सम्पादक श्री योगेश चन्द्र बहुगुणा ने सर्जनापरक श्रम किया है, जिसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। पूरब से पश्चिम तक फैले हुए विशाल हिमालय के क्षेत्रीय जीवन और संस्कृति की झलक देने के साथ अतीत की गाथा और वर्तमान के संघर्ष को प्रस्तुत करने का प्रयत्न ही प्रकाशित पहाड़-अंक को सार्थक बनाता है।

रूपाम्बरा (वर्ष-शरत् 2009 / भाषा साहित्य विशेषांक-20), सम्पा. : स्वदेश भारती, राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी 22-बी, प्रतापादित्य रोड, कोलकाता-700026, वार्षिक मूल्य : 100/-रु० मात्र

× × × निबन्ध, संस्मरण, कविता, कहानी, वैचारिक आलेख आदि से सम्बन्धित रूपाम्बरा का यह विशेषांक संग्रहणीय है।

प्रभात खबर (दीपावली विशेषांक 2009), सम्पादक : हरिवंश, 15 पी, कोकर इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, राँची-834001

× × × प्रभात खबर का यह अंक भारतीय वामपंथ एवं उसकी वर्तमान स्थिति की आंतरिक पड़ताल प्रस्तुत करता है। इस अंक में महत्त्वपूर्ण चिंतकों / साहित्यकारों द्वारा नक्सलवाद / माओवाद का विश्लेषण सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य में किया गया है जो समस्या के वास्तविक स्वरूप का रेखांकन है। पक्ष-विपक्ष की बहस से कुछ समाधान खोजने का प्रयत्न ही इस अंक को महत्त्व प्रदान करता है।

डॉ० भगवान सहाय शर्मा का सृजन लोक

यादों के झरोखे से, डॉ० भगवान सहाय शर्मा, सम्पादक : डॉ० सुधीर आचार्य, प्रकाशक : ब्राइट कैरियर एकेडेमी, अम्बाह, मुरैना (मध्य प्रदेश), प्रथम संस्करण, मूल्य : 300/-रु० मात्र

उपर्युक्त दोनों ग्रन्थ डॉ० सुधीर आचार्य ने अपने विद्वान रचनाधर्मी पिता स्व० डॉ० भगवान सहाय शर्मा को ही अर्पित किये हैं। पहले ग्रन्थ में हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वान आचार्य डॉ० भगवानसहाय शर्मा के विचारपरक शोध-आलेख एवं विशिष्ट व्याख्यान संकलित हैं। दूसरे ग्रन्थ 'यादों के झरोखे से' के अन्तर्गत डॉ० शर्मा के स्वजनों, मित्रों, शिष्यों आदि के सम्बन्धित संस्मरण हैं, जिनसे डॉ० शर्मा के व्यक्तित्व का आभास मिलता है।

बड़े भाई साहब (कहानी), प्रेमचंद, जीवन प्रभात प्रकाशन, कृपानगर, मुंबई-400056

× × समयाभाव में हिन्दी जानने या सीखने वालों के लिये अल्पमोली 'पुराने चावल' ग्रन्थमाला का प्रकाशन एक सराहनीय योजना है। इसके अन्तर्गत प्रेमचंद, प्रसाद, भारतेन्दु, उग्र, गुलेरी आदि नये-पुराने लेखकों से भी पाठक परिचित हो सकेंगे।

अब्बास कियारोस्तामी की कविताएँ : 'तनाव' पत्रिका के 110वें अंक में मूल ईरानी कवि अब्बास कियारोस्तामी की कविताएँ प्रकाशित हैं। इन कविताओं का फारसी से फिनिश भाषा में उल्था याक्को हैमेन आंविला ने किया और फिनिश भाषा से हिन्दी रूपांतर मोहम्मद सईद शेख द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 दिसम्बर 09 अंक : 12

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)
विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)